RNI NO.- CHHHIN/2023/87391

स्वतंत्र छत्तीसगढ़

अंक-01 वर्ष-3 माह-अप्रैल 2025 प्रकाशन तिथि- अप्रैल 2025 रायपुर से प्रकाशित पृष्ठ-40 मूल्य-11/-

निवेश के मामले में देश के टॉप-10 राज्यों में शामिल हुआ छत्तीसगढ़

उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा ने नक्सल प्रभावित अति संवेदनशील क्षेत्र रायगुड़ेम में पेड़ के नीचे लगाई चौपाल

Shri Balaji Vidya Mandir

Managed by

ANDHRA ASSOCIATION, RAIPUR

46 YEARS OF EXCELLENCE

Admissions OPEN 2025-26

FOR NURSERY TO CLASS XII

The School of Quality
Education and Temple of Wisdom
Your kids Deserve
The best Education

Take Pride to Admit your child in one of the best schools with Quality Education

Branch Office

Contact Office Between

10:00 AM & 03.00 PM

Sec-II Devendra Nagar Raipur (C.G.)

Emaill: shribalajischoolraipur@gmail.com

Website : sbvmraipur.com

Shri Balaji Vidya Mandir

Managed by ANDHRA ASSOCIATION, RAIPUR
Basant Vihar Gate No.1 Near Basant Vihar Garden, Gondwara Raipur (C.G.)
Time -10:00 AM & 03.00 PM

SBVM Kids Zone

Managed by ANDHRA ASSOCIATION, RAIPUR
Vijay Nagar, Behind Patel Cable, Bhanpur, Raipur

Time -10:00 AM & 01.00 PM

MOB: 9406400007, 9329128867

स्वतंत्र छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ से प्रकाशित एक सम्पूर्ण पत्रिका

प्रधान संपादकः

जी. भूषण राव

समाचार संपादकः

जी.वी.एस. रूक्मणि देवी

उप संपादकः

राखी श्रीवास्तव

सलाहकार संपादकः

रविश बेंजामिन

अशोक तोमर

मार्केटिंग हेडः

शैलेन्द्र दवे

मार्केटिंग प्रतिनिधिः

हरिमोहन तिवारी

आवरण सज्जाः

Infinity

ब्यूरो हेडः

बिलासपुरः विनीत चौहान

जशपुरः आनंद गुप्ता

कोरियाः प्रवीण निशी

बस्तरः सुनील सिंह राठौर

आफिसः

बी-13, बसंत पार्क

अनमोल सुपर मार्केट के पास

महावीर नगर, न्यू पुरेना रायपुर छ.ग.

ईमेलः swatantrachhattisgarh@gmail.com

वेबसाईटः www.swatantrachhattisgarh.com

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक

जी. भूषण राव द्वारा सागर प्रिंटर्स, पुरानी बस्ती रायपुर द्वारा मुद्रित एवं बी-13, बसंत पार्क, अनमोल सुपर मार्केट के पास, महावीर नगर, न्यू पुरेना, रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित

मो.:- 99934-54909

संपादकः जी. भूषण राव

पत्रिका में प्रकाशित लेख, लेखकों के अपने विचार है, किसी भी विवाद की स्थिति में सुनवाई का क्षेत्र रायपुर होगा।

वार्षिक सदस्यता शुल्क सभी (विशेषांकों सहित प्रस्तावित) 132/-रू.मात्र

Pg 3

छत्तीसगढ़ बन रहा निवेश का नया हब...

Pg 5

नक्सलियों के साथ बिना शर्त शांति वार्ता के लिए तैयार है छत्तीसगढ़ सरकार- उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा

Pg 11

बस्तर में विकास की नई रोशनी- नक्सल प्रभावित क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार...

Pg 31

बस्तर का धुड़मारास विश्व के सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गांवों में शामिल

Pg 34

भीषण गर्मी में भी छत पर लगी टंकी का पानी गर्म नहीं होगा, अपनाएं यह तरीका, रिजल्ट कर देगा हैरान

हर तबादले में एक सन्देश छुपा होता है

हाल ही में छत्तीसगढ़ में हुए प्रशासनिक फेरबदल के अंतर्गत 11 कलेक्टरों और 41 आईएएस अधिकारियों का तबादला किया गया है। इस बड़े पैमाने पर हुआ प्रशासनिक बदलाव मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में चल रहे विष्णु के सुशासन मॉडल की दिशा में एक निर्णायक कदम माना जा रहा है। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय की सरकार अपने कार्यकाल की शुरुआत से ही प्रशासनिक पारदर्शिता, जवाबदेही और तेज़ निर्णय क्षमता को प्राथमिकता देती रही है। विष्णु का सुशासन केवल एक रूपक नहीं, बल्कि एक ऐसी शासन प्रणाली की अभिव्यक्ति है, जिसमें नीति, नीति-निर्माण और निष्पादन में संतुलन और समरसता हो। विष्णु, हिन्दू धर्म में पालक और संतुलन बनाए रखने वाले देवता माने जाते हैं, और सरकार इसी सन्देश को अपने प्रशासन में उतारने की कोशिश कर रही है।

11 जिलों के कलेक्टरों और 41 आईएएस अधिकारियों का तबादला केवल प्रशासनिक रूटीन भर नहीं है। यह सरकार की उस मंशा का संकेत है जिसमें वह कार्य कुशलता, ईमानदारी और जनहित को सर्वोपरि मानती है। नये पदस्थ अधिकारी जहां नई ऊर्जा और दृष्टिकोण लेकर आएंगे, वहीं सरकार ने यह स्पष्ट किया है कि प्रदर्शन के आधार पर ही पदस्थापना होगा — न कि वरिष्ठता या राजनीतिक समीकरणों के आधार पर।

इन तबादलों से प्रशासनिक व्यवस्था में न केवल गति आएगी, बल्कि नये जिलों को भी नई सोच और योजनाओं का लाभ मिल सकेगा। इससे अधिकारियों पर यह दबाव भी बनेगा कि वे केवल कार्यालय की कुर्सी भर न संभालें, बल्कि जनता के प्रति उत्तरदायी बनें। यदि इस बदलाव को केवल एक पावर शफल के रूप में देखा गया, तो यह अवसर चूक जाएगा। लेकिन यदि इसे सुशासन की दिशा में एक रणनीतिक प्रयास के रूप में समझा गया, तो यह बदलाव सकारात्मक परिणाम ला सकता है।

विष्णु का सुशासन एक आदर्श की कल्पना है जिसे व्यवहार में उतारने की शुरुआत हो चुकी है। बड़े पैमाने पर हुए तबादले इस बात का संकेत हैं कि सरकार बदलाव के मूड में है और अब शिथिलता को जगह नहीं दी जाएगी। जनता की अपेक्षाएँ बड़ी हैं, और यह बदलाव तभी सार्थक होगा जब इन अधिकारियों का कार्य आमजन की ज़िंदगी में प्रत्यक्ष बदलाव ला सके।

हर तबादले में एक संदेश छुपा होता है — यह केवल कुर्सी बदलने का खेल नहीं, बल्कि शासन को नए स्वरूप में ढालने का प्रयास होता है। यह देखना दिलचस्प होगा कि विष्णु का सुशासन सिद्धांत व्यवहार में कितना सफल हो पाता है।

आपका अपना
भूषण राव

छत्तीसगढ़ बन रहा निवेश का नया हब...

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में राज्य औद्योगिक क्रांति की ओर अग्रसर

छत्तीसगढ़ ने वित्तीय वर्ष 2025 में औद्योगिक निवेश के क्षेत्र में एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। प्रोजेक्ट टूडे सर्वे द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार, राज्य में 218 नई परियोजनाओं में 1,63,749 करोड़ रूपए का निवेश आया है, जो देश के कुल निवेश का 3.71 प्रतिशत है। यह उपलब्धि छत्तीसगढ़ को, देश के टॉप टेन निवेश वाले राज्यों में शामिल करती है। इस सफलता के पीछे मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के दूरदर्शी नेतृत्व और छत्तीसगढ़ सरकार की नई औद्योगिक नीति 2024-30 का महत्वपूर्ण योगदान है। यहां यह उल्लेखनीय है कि वर्ष 2024 में हुए निवेश को मिलाकर राज्य में अब तक 4.4 लाख करोड़ रूपए का औद्योगिक निवेश हुआ है।

एक नवंबर 2024 से लागू नई औद्योगिक नीति 2024-30 ने छत्तीसगढ़ को निवेशकों के लिए एक आकर्षक राज्य बना दिया है। इस नीति में न्यूनतम शासन, अधिकतम प्रोत्साहन के सूत्र को अपनाया गया है, जिसके तहत सिंगल विंडो सिस्टम 2.0, ऑनलाइन आवेदन, और त्वरित प्रोसेसिंग जैसी सुविधाएं शुरू की गई हैं। नीति में फार्मास्यूटिकल्स, आईटी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), ग्रीन हाइड्रोजन, सेमीकंडक्टर, और पर्यटन जैसे क्षेत्रों को विशेष प्रोत्साहन दिया गया है। उद्योगों को 30-50 प्रतिशत सब्सिडी, 5 से 12 साल तक कर छूट, और ब्याज अनुदान जैसे प्रावधानों ने निवेशकों का भरोसा बढ़ाया है। नीति में 1000 से अधिक रोजगार देने वाली इकाइयों के लिए बी-स्पोक पॉलिसी और प्रति व्यक्ति 15,000 तक प्रशिक्षण अनुदान जैसे प्रावधान भी शामिल हैं, जिसका लक्ष्य अगले 5 वर्षों में 5 लाख नए रोजगार सृजित करना है।

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय की पहल पर निवेश को आकर्षित करने के लिए देश के प्रमुख शहरों दिल्ली, मुंबई, और बेंगलुरु में इन्वेस्टर्स कनेक्ट मीट का आयोजन किया गया। इन समिट्स में देश-विदेश के प्रमुख उद्योगपतियों ने हिस्सा लिया, जिसके परिणामस्वरूप 4.4 लाख करोड़ के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए। मुंबई में आयोजित समिट में 6000 करोड़ के निवेश प्रस्ताव और अमेरिका व रूस के कॉन्सल जनरल से विदेशी प्रत्यक्ष निवेश की सहमति मिली। दिल्ली में 15,184 करोड़ और बेंगलुरु में ऊर्जा क्षेत्र में निवेश की सहमति ने छत्तीसगढ़ की औद्योगिक क्षमता को रेखांकित किया है। मुख्यमंत्री श्री साय ने उद्योगपतियों को आश्वस्त किया कि छत्तीसगढ़ सरकार पारदर्शी और निवेशक अनुकूल नीतियों के साथ हरसंभव सहयोग प्रदान करेगी।

छत्तीसगढ़ सरकार ने पिछले एक साल में 300 से अधिक सुधार लागू किए, जिसने कागजी प्रक्रियाओं को कम कर कारोबारी माहौल को पारदर्शी और तेज बनाया। सिंगल विंडो सिस्टम 2.0 के जरिए सभी स्वीकृतियां और लाइसेंस आसानी से उपलब्ध हैं, और सब्सिडी जारी करने की प्रक्रिया को 7 दिनों के भीतर सीमित किया गया है। इन सुधारों ने छोटे व्यापारियों से लेकर बड़े उद्योगपतियों तक के लिए छत्तीसगढ़ को एक पसंदीदा गंतव्य बनाया है।

छत्तीसगढ़ ने पहली बार सेमीकंडक्टर, डेटा सेंटर, और एआई आधारित उद्योगों के लिए निवेश प्रस्ताव प्राप्त किए हैं। नवा रायपुर में हाल ही में राज्य के पहले सेमीकंडक्टर प्लांट का भूमिपूजन हुआ, जो तकनीकी नवाचार की दिशा में एक बड़ा कदम है। नया रायपुर को बेंगलुरु और हैदराबाद की तर्ज पर आईटी हब के रूप में विकसित करने की योजना है, जिसमें नैसकॉम के साथ समझौता एक महत्वपूर्ण कदम है।

मुख्यमंत्री साय ने कहा है कि छत्तीसगढ़ की नई औद्योगिक नीति न केवल उद्योगों की स्थापना को बढ़ावा देती है, बल्कि रोजगार सृजन और आर्थिक समृद्धि पर भी जोर देती है। हमारा लक्ष्य अमृतकाल-छत्तीसगढ़ विजन 2047 नवा अंजोर के तहत विकसित भारत के निर्माण में योगदान देना है। इन निवेशों से न केवल आर्थिक प्रगति को गति मिलेगी, बल्कि हजारों युवाओं को रोजगार के नए अवसर भी प्राप्त होंगे। छत्तीसगढ़ अब नक्सल प्रभावित छवि से बाहर निकलकर एक औद्योगिक और तकनीकी हब के रूप में उभर रहा है। राज्य नई ऊंचाइयों को छूने के लिए तैयार है, देश के आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण योगदान देगा।

छत्तीसगढ़ में रखी गई सेमीकंडक्टर प्लांट की नींव, हर साल बनेंगी 10 अरब चिप्स...

अब छत्तीसगढ़ में इलेक्ट्रिक वाहनों को तेजी से चार्ज करने और 5जी नेटवर्क के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला गैलियम नाइट्राइड सेमीकंडक्टर का निर्माण होगा. छत्तीसगढ़ ने शु वार को तकनीकी विकास की दिशा में एक नया इतिहास रचा है. मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने नवा रायपुर में देश के पहले अल्ट्रा एज टेक्नोलॉजी आधारित गैलियम नाइट्राइड (जीएएन) आधारित सेमीकंडक्टर निर्माण संयंत्र की आधारशिला रखी. यह परियोजना न केवल राज्य के लिए एक बड़ी उपलब्धि है, बल्कि भारत को सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक निर्णायक कदम भी है. इस अवसर पर पॉलीमेटेक इलेक्ट्रॉनिक्स के मैनेजिंग डायरेक्टर ईश्वरा राव नंदम ने छत्तीसगढ़ में 10 हजार करोड़ के अतिरिक्त निवेश की घोषणा भी की. उन्होंने बताया कि अप्रैल-मई 2026 से प्लांट से उत्पादन भी शुरू हो जाएगा.

प्रदेश को मिली आर्थिक मजबूती

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने इस अवसर पर कहा कि यह हमारे प्रदेश के लिए गर्व और प्रगति का ऐतिहासिक क्षण है. सेमीकंडक्टर प्लांट की स्थापना केवल एक औद्योगिक निवेश नहीं, बल्कि तकनीकी आत्मनिर्भरता की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है. इससे न केवल हमारे युवाओं को रोजगार के नए अवसर प्राप्त होंगे, बल्कि प्रदेश की आर्थिक स्थिति को भी मजबूती मिलेगी.

1,143 करोड़ रुपये का निवेश

करीब 1,143 करोड़ रुपये के निवेश से बनने वाला यह अत्याधुनिक संयंत्र चेन्नई की पॉलीमेटेक इलेक्ट्रॉनिक्स की ओर से स्थापित किया जा रहा है. यह संयंत्र अत्याधुनिक तकनीक से 5 नैनोमीटर और 3 नैनोमीटर की एडवांस चिप्स तैयार करेगा.

गैलियम नाइट्राइड का फायदा

गैलियम नाइट्राइड तकनीक को वर्तमान वैश्विक सेमीकंडक्टर उद्योग में गेमचेंजर माना जा रहा है. यह तकनीक तेज, टिकाऊ और ऊर्जा-कुशल है, जो 5जी, 6जी मोबाइल नेटवर्क, पावर इलेक्ट्रॉनिक्स, डेटा एनालिटिक्स, रक्षा क्षेत्र और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई, ढ्ढ) जैसे क्षेत्रों के लिए बेहद जरूरी है. अब तक भारत को इस तरह की चिप्स विदेशों से आयात करनी पड़ती थी. लेकिन, अब छत्तीसगढ़ में इनका उत्पादन होने से देश की तकनीकी आत्मनिर्भरता को नई दिशा मिलेगी.

विदेशी निवेश को भी मिलेगी गति

इस परियोजना से विदेशी निवेश (एफडीआई) को भी गति मिलेगी. कंपनी का लक्ष्य है कि 2030 तक हर साल 10 अरब चिप्स का निर्माण किया जाए. इस परियोजना से छत्तीसगढ़ में हजारों लोगों को प्रत्यक्ष और लाखों को अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार मिलने की संभावना है. इसका सबसे बड़ा सामाजिक प्रभाव बस्तर और अन्य नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में दिखेगा, जहां युवाओं को तकनीकी प्रशिक्षण देकर आधुनिक उद्योग से जोड़ा जाएगा.

राज्य सरकार ने 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस% के साथ-साथ 'स्पीड ऑफ डूइंग बिजनेस पर भी जोर देते हुए इस यूनिट की स्थापना में किसी भी अड़चन को रोकने के लिए तेजी से कार्रवाई की. छत्तीसगढ़ सरकार ने दिसंबर 2024 में नई दिल्ली में आयोजित 'छत्तीसगढ़ इन्वेस्टर कनेक्ट% के दौरान पॉलीमेटेक इलेक्ट्रॉनिक्स के साथ निवेश प्रस्ताव पर हस्ताक्षर किए थे. अब शिलान्यास समारोह के साथ छत्तीसगढ़ सरकार 1,143 करोड़ रुपए के निवेश से राज्य की पहली उन्नत सेमीकंडक्टर यूनिट की स्थापना के लिए तैयार है.

उद्योग विभाग के अधिकारियों के अनुसार, कंपनी को नवा रायपुर के सेक्टर 5 में 45 दिनों से भी कम समय में टेंडर प्रक्रिया के माध्यम से भूमि आवंटित की गई और 25 दिनों से कम में लीज डीड का पंजीकरण पूरा कर लिया गया.

नक्सलियों के साथ बिना शर्त शांति वार्ता के लिए तैयार है छत्तीसगढ़ सरकार- उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा

अभियान और सुरक्षाबलों के नए शिविर स्थापित करने से रोकना शामिल है। सोशल मीडिया पर प्रसारित छत्तीसगढ़ के उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा ने बुधवार को कहा कि उनकी सरकार पहले ही स्पष्ट कर चुकी है कि वह नक्सलियों के साथ बिना शर्त शांति वार्ता के लिए तैयार है। शर्मा का बयान ऐसे समय में आया है जब कथित तौर पर भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) ने कुछ शर्तों के साथ 'युद्ध विराम' की घोषणा करने की इच्छा जताई है। माओवादियों की शर्तों में नक्सल विरोधी माओवादियों द्वारा जारी एक कथित बयान में माओवादियों ने केंद्र और राज्य सरकारों से शांति वार्ता के लिए अनुकूल माहौल बनाने को कहा है। माओवादियों की केंद्रीय समिति के प्रवक्ता अभय द्वारा जारी किया गया यह कथित बयान केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की छत्तीसगढ़ की निर्धारित यात्रा से दो दिन पहले सामने आया है।

माओवादियों के कथित बयान पर प्रतिक्रिया देते हुए गृह विभाग भी संभालने वाले शर्मा ने कहा, सरकार पहले ही स्पष्ट कर चुकी है कि वह नक्सलियों के साथ बिना शर्त शांति वार्ता के लिए तैयार है तथा राज्य सरकार ने एक आकर्षक आत्मसमर्पण और पुनर्वास नीति पेश की है।

उपमुख्यमंत्री ने कहा, उन्होंने (नक्सलियों ने) पहले भी इस बारे में (शांति वार्ता) कहा था, लेकिन कई नियम और शर्तें रखी थीं। माओवादियों ने ऐसी शर्तें रखी थीं कि सुरक्षाबलों को छह महीने तक शिविरों में रहना चाहिए और सुरक्षाबलों के नए शिविर नहीं बनाए जाने चाहिए। ऐसी सभी मांगों का कोई मतलब नहीं है और उन पर विचार नहीं किया जा सकता। अब उन्होंने अपने पत्र (बयान) में कहा है कि वे युद्ध विराम की घोषणा करेंगे। युद्ध विराम का कोई मुद्दा नहीं है। मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि ऐसी शब्दावली के साथ बातचीत कैसे होगी। उन्होंने कहा, मैं पहले भी कह चुका हूं और फिर कह रहा हूं कि राज्य और केंद्र सरकार एक भी गोली नहीं चलाना चाहतीं और पुनर्वास नीति इसी उद्देश्य से लाई गई है। बहुत से लोगों ने आत्मसमर्पण किया है। उन्हें नीति का लाभ दिया जा रहा है। हम चाहते हैं कि नक्सली हिंसा छोड़कर मुख्यधारा में शामिल हों और खुशहाल जीवन जिएं।'

शर्मा ने कहा, हम चाहते हैं कि यह समस्या खत्म हो और बस्तर क्षेत्र के हर गांव में विकास हो। उन्होंने कहा, वे कहते हैं कि यदि सरकार सुरक्षाबलों के शिविरों का विस्तार नहीं करती तो वे युद्ध विराम की घोषणा कर देंगे। क्या युद्ध की स्थिति है? अगर वे वास्तव में बिना किसी शर्त के शांति वार्ता चाहते हैं तो सरकार सौ बार तैयार है। अगर आप (नक्सली) शांति वार्ता चाहते हैं तो आपको एक व्यक्ति या समिति भेजनी चाहिए। यह पूछे जाने पर कि क्या सरकार शांति वार्ता के लिए समिति बनाएगी, शर्मा ने इनकार करते हुए कहा कि सरकार ने पहले भी ऐसी समितियां बनाई हैं, लेकिन अब वह ऐसा नहीं करेगी। उन्होंने कहा कि यदि नक्सली वास्तव में बातचीत करना चाहते हैं तो उन्हें कोई व्यक्ति या समिति भेजनी चाहिए। माओवादियों द्वारा मूल रूप से तेलुगु में जारी कथित प्रेस नोट में कहा गया है कि केंद्र सरकार और (नक्सली हिंसा के खतरे का सामना कर रही) राज्य सरकारों ने संयुक्त रूप से क्रांतिकारी आंदोलन के खिलाफ 'कागर' अभियान शुरू किया है।

प्रेस नोट में कहा गया है कि केंद्र और राज्य सरकारों ने विशेष रूप से छत्तीसगढ़ में माओवाद विरोधी अभियान तेज कर दिए हैं और पिछले 15 महीनों में 400 से अधिक माओवादी मारे गए हैं। बयान में यह आरोप भी लगाया गया है कि कई नागरिकों को अवैध रूप से हिरासत में लिया गया है। बयान में कहा गया है, हम जनता के हित में शांति वार्ता के लिए हमेशा तैयार हैं। इसलिए इस मौके पर हम केंद्र और राज्य सरकार के सामने शांति वार्ता के लिए सकारात्मक माहौल बनाने का प्रस्ताव रख रहे हैं। इसके लिए हमारा प्रस्ताव है कि केंद्र और राज्य सरकारें छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र (गढ़चिरौली), ओडिशा, झारखंड, मध्य प्रदेश और तेलंगाना राज्यों में कागर के नाम पर की जा रही हत्याओं, नरसंहार को रोकें और सशस्त्र बलों के नए शिविरों की स्थापना को रोकें। यदि केंद्र और राज्य सरकारें इन प्रस्तावों पर सकारात्मक प्रतिक्रिया देती हैं, तो हम तुरंत युद्धविराम की घोषणा कर देंगे। माओवादियों ने बुद्धिजीवियों, मानवाधिकार संगठनों, पत्रकारों, छात्रों, आदिवासियों और पर्यावरण कार्यकर्ताओं से भी अपील की है कि वे सरकार पर शांति वार्ता शुरू करने के लिए दबाव डालें और वार्ता के लिए देशव्यापी अभियान चलाएं।

ज्ञानपीठ का सम्मान विनोद कुमार शुक्ल

साहित्य के ज्ञानपीठ पुरस्कार से नवाजे जाने वाले छत्तीसगढ़ के पहले लेखक होंगे शुक्ल

देश के जानेमाने प्रसिद्ध साहित्यकार विरोद कुमार शुक्त को वर्ष 2024 के लिए 59वां ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किए जाने की घोषणा की गई है। भारतीय ज्ञानपीठ के बयान के मुताबिक, शुक्ल को हिंदी साहित्य में उनके अद्वितीय योगदान, सृजनात्मक और विशिष्ट लेखन शैली के लिए इस सम्मान के वास्ते चुना गया है। वह हिंदी के 12वें साहित्यकार हैं ,जिन्हें यह पुरस्कार प्रदान किया जा रहा है. राजधानी में रह्शुक्ल छत्तीसगढ़ राज्य के ऐसे पहले लेखक हैं, जिन्हें इस सम्मान से नवाजा जाएगा।

ज्ञानपीठ पुरस्कार भारतीय साहित्य का सर्वोच्च सम्मान है, और जब यह सम्मान विनोद कुमार शुक्ल को मिला, तो यह केवल एक लेखक की उपलब्धि नहीं,बल्कि हिंदी की सहज संवेदनशील और नवाचारी धारा की जीत भी है। ज्ञानपीठ पुरस्कार का मिलना न केवल उनकी लेखनी की उत्कृष्टता का सम्मान है ,बल्कि यह हिंदी साहित्य की उस धारा की स्वीकृति भी है, जो सरलता में गहराई ढूंढती है। यह सम्मान हमें याद दिलाता है कि बड़े साहित्य की पहचान केवल भारी-भरकम विचारों से नहीं, बल्कि छोटे-छोटे जीवनानुभवों की बारीक अभिव्यक्ति से भी होती है। उनका लेखन यह सिखाता है कि साहित्य केवल बौद्धिकता नहीं, बल्कि संवेदनशीलता भी है। उनकी भाषा बिना शोर किए असर डालती है।

मुझे कभी नहीं लगा की ज्ञानपीठ पुरस्कार मुझे मिलेगा- शुक्ल

हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार विनोद कुमार शुक्ल ने शनिवार को उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार दिए जाने की घोषण पर खुशी जताई और कहा कि उन्हें कभी नहीं लगा कि पुरस्कार मिलेगा। यह पूछे जाने पर कि ज्ञानपीठ पुरस्कार मिहने की घोषणा की यह किस रूप में लेते हैं।तो शुक्ल ने कहा , यह भारत का, साहित्य का एक बहुत बड़ा पुरस्कार है। इतना बड़ा पुरस्कार मिलना यह मेरे लिए खुशी की बात है। शुक्ल ने कहा कि उन्हें कभी नहीं लगा कि यह पुरस्कार मिलेगा। शुक्ल ने कहा कि पुरस्कार की तरफ मेरा ध्यान जाता ही नहीं। दुसरे मेरा ध्यान दिलाते हैं। दूसरे मुझसे कहते है, परिचर्चा में, बातचीत में, कि अब आपको ज्ञानपीड पुरस्कार मिलना चाहिए, मैं उनको संकोच में जवाब दे नहीं दे पाता ।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने रविवार को राजधानी रायपुर स्थित वरिष्ठ साहित्यकार विनोद कुमार शुक्ल के निवास पहुंचकर उनसे मुलाकात की. मुख्यमंत्री साय ने शुक्ल को ज्ञानपीठ सम्मान की घोषणा पर उन्हें हार्दिक बधाई दी. सीएम ने विनोद कुमार शुक्ल से कहा कि आपने छत्तीसगढ़ का मान बढ़ाया है. इस बीच सभी प्रदेशवासियों की तरफ से शुक्ल का सम्मान करते हुए उन्हें शॉल-श्रीफल और बस्तर आर्ट का प्रतीक चिन्ह नंदी भेंट किया.

यह मेरा सौभाग्य है

मुख्यमंत्री ने विनोद कुमार शुक्ल से कहा कि साहित्य के क्षेत्र में आपके विशिष्ट योगदान पर आपको देश का सबसे प्रतिष्ठित ज्ञानपीठ सम्मान दिए जाने की घोषणा से पूरा प्रदेश गौरवान्वित अनुभव कर रहा है. यह मेरा सौभाग्य है कि आज खुशी के इस पल में आपसे भेंट करने का मुझे अवसर मिल रहा है.

राजनांदगांव छत्तीसगढ़ की संस्कारधानी है

मुख्यमंत्री ने विनोद कुमार शुक्ल का कुशल क्षेम पूछते हुए उनके स्वास्थ्य के विषय में जानकारी ली. मुख्यमंत्री साय ने कहा कि आप राजनांदगांव के रहने वाले हैं. राजनांदगांव छत्तीसगढ़ की संस्कारधानी है. वहां गजानन माधव मुक्तिबोध, डॉ. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी और बलदेव प्रसाद मिश्र जैसे साहित्यकारों ने अपनी साहित्य साधना की है.

नांदगांव की स्मृतियां उनके साथ साझा की

मुख्यमंत्री द्वारा राजनांदगांव का जिक्र किए जाने पर शुक्ल ने अपने बचपन के नांदगांव की स्मृतियां उनके साथ साझा की. शुक्ल ने कहा कि मेरा जन्म राजनांदगांव में हुआ. बचपन का वह नांदगांव आज भी मेरे मन पर छाया हुआ है. मैं आज भी वहां जाता हूं, तो उसी नांदगांव को ढूंढने की कोशिश करता हूं. मगर अब समय के साथ काफी बदलाव आ गया.

परिवारजनों से भी मिले सीएम

मुख्यमंत्री ने विनोद कुमार शुक्ल के परिवारजनों से भी मुलाकत की और उनका हाल-चाल जाना. इस अवसर पर मुख्यमंत्री के मीडिया सलाहकार पंकज झा, मुख्यमंत्री के प्रेस अधिकारी आलोक सिंह, मुख्यमंत्री के सचिव पी दयानन्द, जनसंपर्क आयुक्त रवि मित्तल, रायपुर प्रेस क्लब के अध्यक्ष प्रफुल्ल ठाकुर और विनोद कुमार शुक्ल के परिवारजन सहित अन्य गणमान्यजन उपस्थित थे.

10वीं-12वीं बोर्ड परीक्षा में इन छात्रों को मिलेगा बोनस अंक

छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मंडल की 10वीं और 12वीं बोर्ड परीक्षा में शामिल हुए छात्रों के लिए बड़ी अपडेट है। उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन पूरा हो चुका है। माशिमं मई के पहले सप्ताह में दोनों परीक्षाओं के नतीजे एक साथ घोषित कर सकती है। माशिमं की ओर से मूल्यांकन दो चरणों में कराया गया। सभी उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन पूरा हो चुका है। इस बार 10वीं और 12वीं की परीक्षा में कुल 5.71 लाख छात्र शामिल हुए थे। 10वीं और 12वीं की उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन प्रदेश के 36 केन्द्रों में किया गया है।

माशिमं से मिली जानकारी के अनुसार, किसी मूल्यांकनकर्ता के अनुपस्थित रहने पर भी संबंधित विषय का मूल्यांकन कार्य प्रभावित न हो और मूल्यांकन समय पर पूरा हो सके, इसके लिए इस बार मूल्यांकनकर्ताओं की संख्या बढ़ाई गई थी। मूल्यांकन से पहले ही सभी मूल्यांकन केन्द्र के प्रभारियों की बैठक लेकर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए, जिसके अनुसार मूल्यांकन कराया गया।

मिली जानकारी के अनुसार, माशिमं मई के पहले सप्ताह में दोनों परीक्षाओं के नतीजे एक साथ घोषित कर सकती है। इसके लिए तैयारियों में जुटी हुई है। मूल्यांकन के बाद से नतीजे तैयार करने का काम तेजी से जारी है। इस बार 9 मई से पहले बोर्ड परीक्षाओं के नतीजे घोषित किए जाने की संभावना है।

छत्तीसगढ़ बोर्ड परीक्षा में खेल, स्काउट-गाइड, एनसीसी, एनएसएस, साक्षरता जैसे क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों को बोनस अंक दिए जाते हैं। यह बोनस अंक राज्य, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शन के आधार पर दिए जाते हैं, जिसमें राज्य स्तर के लिए 10 अंक, राष्ट्रीय स्तर के लिए 15 अंक और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के लिए 20 अंक शामिल हैं।

प्रधानमंत्री मोदी के आर्थिक सुधारों से भारत बनी दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था- मुख्यमंत्री विष्णु देव साय

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के व्यापक आर्थिक सुधारों के कारण भारत आज दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। जीएसटी और कर सुधारों ने टैक्स व्यवस्था को सरल बनाया है और राजस्व संग्रहण को मजबूत किया है। चार्टर्ड अकाउंटेंट्स भारत की इस विकास यात्रा में प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं और विकसित भारत 2047 के लक्ष्य को पाने में भी उनकी भागीदारी अहम होगी। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने आज राजधानी रायपुर में इंस्टिट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला नेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन बैंक ऑडिट एंड एआई को संबोधित करते हुए यह बात कही। इस अवसर पर उन्होंने सीए छत्तीसगढ़ के विशेष लोगो का भी विमोचन किया।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस भविष्य का सबसे बड़ा औजार

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि बौद्धिक वर्ग हमेशा नई तकनीकों को अपनाता है और एआई ऐसी ही एक गेम-चेंजर तकनीक है। उन्होंने माना कि एआई न केवल सीए पेशे को और सशक्त करेगा, बल्कि इस क्षेत्र की गुणवत्ता व गति को भी बढ़ाएगा। उन्होंने एआई से जुड़ी संभावनाओं और चुनौतियों पर भी प्रकाश डाला।

मुख्यमंत्री श्री साय ने आईसीएआई की स्थापना को भारतीय अकाउंटिंग क्षेत्र की ऐतिहासिक उपलब्धि बताते हुए कहा कि 1949 में 1600 लोगों के साथ शुरू हुआ यह संस्थान आज चार लाख से अधिक सदस्यों का मजबूत संगठन बन चुका है, जो देशभर में आर्थिक उत्तरदायित्व निभा रहे हैं।

नई औद्योगिक नीति से बढ़ा निवेश, प्रदेश को 4 लाख करोड़ से अधिक के निवेश प्रस्ताव प्राप्त

मुख्यमंत्री श्री साय ने छत्तीसगढ़ की नई औद्योगिक नीति की चर्चा करते हुए कहा कि यह नीति निवेशकों के लिए आकर्षक है और सभी वर्गों का ध्यान रखती है। अब तक 4 लाख करोड़ रुपये से अधिक के निवेश प्रस्ताव मिल चुके हैं। उन्होंने बताया कि प्रदेश में लिथियम जैसे दुर्लभ खनिज की उपलब्धता और सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री की स्थापना से प्रदेश की अर्थव्यवस्था को नई उड़ान मिलेगी। उन्होंने कहा कि पिछले 15 महीनों में राज्य सरकार ने कई दूरदर्शी फैसले लिए हैं, जिससे प्रदेश में तेज़ी से विकास हो रहा है और रोजगार के अवसर बढ़ रहे हैं। लोक कल्याणकारी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन नागरिकों के आर्थिक सशक्तिकरण में सहायक सिद्ध हो रहा है।

छत्तीसगढ़ विज़न डॉक्यूमेंट 2047- विकसित भारत में प्रदेश की महती भूमिका

मुख्यमंत्री श्री साय ने छत्तीसगढ़ विज़न डॉक्यूमेंट 2047 का ज़िक्र करते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ विकसित भारत के निर्माण में अग्रणी भूमिका निभाएगा। प्रदेश के 3,000 से अधिक चार्टर्ड अकाउंटेंट्स इसमें भागीदार बनेंगे।

आईसीएआई के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चरणजोत सिंह नंदा ने संस्था की स्थापना (1949) से लेकर अब तक की विकास यात्रा की जानकारी दी। उन्होंने चार्टर्ड एकाउंटेंट के कार्य से जुड़ी चुनौतियों और दायित्वों पर भी प्रकाश डाला और कहा कि देश के सभी सीए मिलकर प्रधानमंत्री के विकसित भारत 2047 के सपनों को साकार करने में अपना बहुमूल्य योगदान देंगे।

इस अवसर पर प्रदेश मीडिया प्रभारी सीए श्री अमित चिमनानी, सीए श्री पंकज शाह, सीए श्री अभय छाजेड़, सीए श्री विकास गोलछा सहित आईसीएआई के रायपुर, भिलाई, बिलासपुर और रायगढ़ ब्रांच के सदस्य उपस्थित थे।

प्रधानमंत्री मुद्रा योजना

आत्मनिर्भर भारत की ओर एक सफल दशक...

(स्वतंत्र छत्तीसगढ़)

भारत में उद्यमिता को नई दिशा देने वाली प्रधानमंत्री मुद्रा योजना ने अपने 10 वर्ष पूरे कर लिए हैं। इस योजना ने छोटे और मध्यम उद्यमों को बिना किसी गारंटी के ऋण प्रदान कर, उन्हें अपने व्यवसाय शुरू करने और आत्मनिर्भर बनने की राह दिखाई है। आज यह योजना न केवल वित्तीय सहायता का माध्यम है, बल्कि सामाजिक परिवर्तन और आर्थिक समृद्धि की कहानी भी बन चुकी है। हाल ही में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने नई दिल्ली स्थित अपने आवास 7, लोक कल्याण मार्ग पर देश भर से आए मुद्रा योजना के लाभार्थियों से संवाद किया। यह संवाद महज़ एक औपचारिक कार्य म नहीं था, बल्कि उन अनगिनत सपनों का उत्सव था जो इस योजना के माध्यम से पंख पाकर उड़ान भर चुके हैं।

स्वावलंबन की सच्ची कहानियाँ

प्रधानमंत्री ने जिन लाभार्थियों से बातचीत की, उनकी कहानियाँ विविधता से भरी थीं–भौगोलिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण से। रायपुर की एक महिला ने घर के किचन से कैफे 'हाउस ऑफ पुचका' की शुरुआत की और युवाओं में उद्यमिता की भावना जगाई। केरल के श्री गोपी कृष्ण ने दुबई की नौकरी छोड़कर सौर ऊर्जा समाधान देने वाला व्यवसाय शुरू किया, जिससे सैकड़ों को रोजगार मिला।

कश्मीर के बारामूला के मुदस्सिर नक्शबंदी ने 'बेक माई केक' शुरू किया और 42 लोगों को रोजगार दिया। उनका 90% लेन-देन PI के माध्यम से होता है, जिससे डिजिटल इंडिया की झलक भी मिलती है। वहीं गुजरात के युवा उद्यमी ने 21 वर्ष की आयु में 3 डी प्रिंटिंग और रोबोटिक्स स्टार्टअप खड़ा किया और शिक्षा के साथ-साथ व्यवसाय को संतुलित किया।

मौन क्रांति का प्रतीक

प्रधानमंत्री ने विशेष रूप से महिलाओं की भागीदारी को सराहा, जो मुद्रा योजना की सबसे बड़ी लाभार्थी बनी हैं। उन्होंने कहा कि यह योजना एक मौन क्रांति है, जिसने समाज में उद्यमिता को लेकर सोच बदल दी है। अब महिलाएं, युवा, ग्रामीण, आदिवासी और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग भी 'नौकरी खोजने' के बजाय 'नौकरी देने' वाले बन रहे हैं। मनाली, भोपाल, आंध्र प्रदेश और रायबरेली से आई महिलाओं ने यह सिद्ध किया कि संकल्प, सही मार्गदर्शन और मुद्रा योजना जैसी सहायता से कोई भी अपने जीवन को बदल सकता है।

अभूतपूर्व उपलब्धि

प्रधानमंत्री ने बताया कि पिछले 10 वर्षों में मुद्रा योजना के अंतर्गत 52 करोड़ ऋण वितरित किए गए हैं, जिनकी कुल राशि 33 लाख करोड़ रुपये से अधिक है। यह दुनिया में सबसे बड़ा वित्तीय समावेशन कार्यक्रम बन गया है। ऋण की अधिकतम सीमा अब 20 लाख रुपये तक कर दी गई है, जो सरकार के बढ़ते भरोसे का प्रतीक है।

आम से खास की ओर

इस योजना की खास बात यह है कि यह केवल आर्थिक सहायता नहीं देती, बल्कि सामाजिक सम्मान, आत्मविश्वास और प्रेरणा भी प्रदान करती है। प्रधानमंत्री ने आग्रह किया कि लाभार्थी कम से कम पांच अन्य लोगों को इस योजना के बारे में बताएं और उन्हें भी उद्यमिता की ओर कदम बढ़ाने के लिए प्रेरित करें।

प्रधानमंत्री मुद्रा योजना केवल एक सरकारी योजना नहीं है–यह एक आंदोलन है, जो भारत को ÷रोजगार माँगने वाले राष्ट्र से रोजगार देने वाला राष्ट्र÷ बनाने की ओर अग्रसर कर रहा है। जिन हाथों ने कभी दूसरों से सहायता माँगी थी, वे अब दूसरों को सहारा दे रहे हैं।

यह योजना बताती है कि यदि सरकार विश्वास जताए, नीति सरल हो और लोगों में इच्छाशक्ति हो, तो भारत का हर कोना सफलता की कहानी लिख सकता है।

बयानार क्षेत्र में होगा स्वास्थ्य सेवाए बेहतर, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का वन मंत्री केदार कश्यप ने किया लोकार्पण

वन एवं जलवायु परिवर्तन तथा सहकारिता मंत्री श्री केदार कश्यप ने आज कोंडागांव जिले के दूरस्थ गांव बयानार में आयोजित लोकार्पण एवं भूमि पूजन कार्यक्रम में शामिल हुए। इस दौरान उन्होंने क्षेत्रवासियों को कुल 03 करोड़ 05 लाख 65 हजार रुपए के विकास कार्यों की सौगात दी। इसमें प्रमुख रूप से बयानार में 1 करोड़ 3 लाख 99 हजार रुपए के सीएसआर मद अंतर्गत निर्मित प्राथमिक चिकित्सा केंद्र भवन का लोकार्पण और 2 करोड़ 1 लाख 66 हजार रुपए के विकास कार्यों का भूमिपूजन शामिल है। वन मंत्री श्री कश्यप ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए क्षेत्रवासियों को शुभकामनाएं दी और कहा कि इस भवन के लोकार्पण से स्वास्थ्य सुविधाओं को मजबूती मिलेगी। साथ ही विभिन्न निर्माण कार्यों से क्षेत्र के विकास को गति मिलेगी।

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के सुशासन में राज्य में स्वास्थ्य सेवाओं का निरंतर विस्तार हो रहा है। इसी क्रम में जिले में भी स्वास्थ्य सुविधाओं के सुदृढ़ीकरण हेतु जिला प्रशासन द्वारा लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। आज ग्राम बयानार को एक नई सौगात के रूप में प्राथमिक चिकित्सा केंद्र के नए भवन की सुविधा प्राप्त हुई है, जो स्वास्थ्य व्यवस्था को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। जिले के अंतिम छोर पर स्थित इस गांव में चिकित्सा केंद्र भवन के लोकार्पण से आसपास के 21 गांवों के लगभग 15 हजार से अधिक ग्रामीणों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं सुलभ होंगी। इस नवीन भवन के आरंभ होने से न केवल दवाओं की समुचित उपलब्धता सुनिश्चित होगी, बल्कि पहले से अधिक मरीजों का इलाज हो सकेगा। ग्राम बयानार में चिकित्सा केंद्र के नए भवन बनने से क्षेत्रवासियोंमें उत्साह और प्रसन्नता का वातावरण है।

201.66 लाख के भूमिपूजन की सौगात

वन मंत्री श्री कश्यप ने क्षेत्रवासियों को 2 करोड़ 1 लाख 66 हजार रुपए के विभिन्न विकास कार्यों की सौगात भी दी है, जिसमें विधायक निधि से विभिन्न निर्माण कार्य और नलकूप खनन का कार्य शामिल है।

रक्तदान शिविर का भी हुआ आयोजन

लोकार्पण और भूमिपूजन कार्यक्रम के अवसर पर नवीन प्राथमिक चिकित्सा केंद्र में रक्तदान शिविर का भी आयोजन किया गया, जिसमें गांव के युवाओं ने स्वैच्छिक रक्तदान किया।

लोकार्पण और भूमिपूजन कार्यक्रम में जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती रीता शोरी, पूर्व विधायक श्री सेवकराम नेताम, जनपद अध्यक्ष श्रीमती अनीता कोर्राम, श्री दीपेश अरोरा, जिला पंचायत सीईओ श्री अविनाश भोई एवं स्वास्थ्य विभाग के अधिकारीगण सहित स्थानीय जनप्रतिनिधिगण और ग्रामवासी उपस्थित थे।

बस्तर में विकास की नई रोशनी- नक्सल प्रभावित क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार...

स्वतंत्र छत्तीसगढ़/भूषण

नक्सल प्रभावित बस्तर में अब विकास की एक नई कहानी लिखी जा रही है। सरकार द्वारा लिए गए ऐतिहासिक फैसलों में से एक, कुख्यात नक्सली कमांडर हिड़मा के गांव पूवर्ती में अस्पताल खोलने का निर्णय, सुशासन और विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हो रहा है। यह पहल न केवल स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करेगी, बल्कि क्षेत्र में शांति और स्थिरता की नई नींव भी रखेगी। बस्तर के पूवर्ती गांव में खुलने वाला यह अस्पताल सिर्फ चिकित्सा सेवा प्रदान करने का केंद्र नहीं होगा, बल्कि यह नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में बदलाव की बयार लाने वाला एक महत्वपूर्ण प्रतीक भी बनेगा। अब ग्रामीणों को इलाज के लिए दूर-दराज के शहरों का रुख नहीं करना पड़ेगा, बल्कि उन्हें अपने ही गांव में बेहतरीन स्वास्थ्य सेवाएं मिल सकेंगी।

यह पहल विशेष रूप से उन लोगों के लिए राहत लेकर आई है जो अब तक चिकित्सा सुविधाओं के अभाव में कई समस्याओं का सामना कर रहे थे। स्थानीय निवासियों को अब सही समय पर उपचार मिल सकेगा, जिससे उनकी जीवन प्रत्याशा और स्वास्थ्य स्तर में सुधार होगा। इस अस्पताल की स्थापना से सरकार और प्रशासन के प्रति ग्रामीणों का विश्वास बढ़ेगा, जिससे नक्सलवाद के प्रभाव को कम करने में मदद मिलेगी। जब लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, बिजली और रोजगार जैसी बुनियादी सुविधाएं मिलती हैं, तो वे हिंसा और उग्रवाद के रास्ते को छोड़कर विकास की मुख्यधारा में शामिल होने के लिए प्रेरित होते हैं।

यह अस्पताल न केवल स्वास्थ्य सेवाओं का केंद्र बनेगा, बल्कि यह स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के नए अवसर भी सृजित करेगा। अस्पताल में डॉक्टर, नर्स, तकनीशियन, सफाई कर्मचारी और अन्य सहयोगी स्टाफ की आवश्यकता होगी, जिससे स्थानीय युवाओं को अपने क्षेत्र में ही रोजगार प्राप्त हो सकेगा। इसके अलावा, अस्पताल के निर्माण और संचालन से जुड़ी अन्य आर्थिक गतिविधियों को भी बढ़ावा मिलेगा, जिससे क्षेत्र में समग्र आर्थिक विकास को गति मिलेगी।

डबल इंजन सरकार द्वारा लिया गया यह निर्णय दर्शाता है कि प्रशासन नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में स्थायी और समावेशी विकास के लिए प्रतिबद्ध है। जब सरकार द्वारा बस्तर जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में स्वास्थ्य, शिक्षा और बुनियादी ढांचे के विकास को प्राथमिकता दी जाती है, तो यह समाज के प्रत्येक वर्ग को सशक्त बनाने में सहायक होता है।

बस्तर के पूवर्ती गांव में अस्पताल की स्थापना केवल एक स्वास्थ्य सुविधा नहीं, बल्कि विकास और शांति की एक नई शुरुआत है। यह पहल क्षेत्र के लोगों के जीवन स्तर को सुधारने के साथ-साथ नक्सलवाद के भय को समाप्त करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। यह दर्शाता है कि जब सरकार और प्रशासन दृढ़ संकल्प के साथ विकास कार्यों को आगे बढ़ाते हैं, तो सबसे कठिन चुनौतियों को भी पार किया जा सकता है। इस तरह की सकारात्मक पहलों को निरंतर बनाए रखने की आवश्यकता है ताकि बस्तर जैसे पिछड़े क्षेत्रों में स्थायी विकास की नींव रखी जा सके और वहां के निवासियों को सुरक्षित, स्वस्थ और समृद्ध जीवन की ओर अग्रसर किया जा सके।

विकसित छत्तीसगढ़ के निर्माण में चैंबर ऑफ कॉमर्स की है महत्वपूर्ण भूमिका- मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय

विकसित छत्तीसगढ़ के निर्माण में छत्तीसगढ़ चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज की महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रदेश में व्यापार, व्यवसाय और उद्योग तेजी से विकास कर रहे हैं, जिसके कारण जीएसटी कलेक्शन में छत्तीसगढ़ देश में अग्रणी है। हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने वर्ष 2047 तक भारत को विकसित देश बनाने का संकल्प लिया है। इसके लिए हम सबको मिलकर विकसित छत्तीसगढ़ बनाना होगा। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने राजधानी रायपुर के शहीद स्मारक ऑडिटोरियम में आयोजित छत्तीसगढ़ चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के शपथ ग्रहण समारोह को संबोधित करते हुए यह बात कही। कार्यक्रम में चैंबर के अध्यक्ष श्री सतीश थौरानी, महामंत्री श्री अजय भसीन, कोषाध्यक्ष श्री निकेश बरड़िया सहित अन्य पदाधिकारियों ने शपथ ग्रहण किया।

मुख्यमंत्री श्री साय ने इस अवसर पर कहा कि छत्तीसगढ़ चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज 62 वर्षों से कार्यशील है, जिससे 12 लाख व्यापारी जुड़े हैं। प्रदेश के इस सबसे बड़े व्यापारी संगठन के इतिहास में पहली बार सर्वसम्मति से निर्वाचन संपन्न हुआ है, जो संगठन की एकजुटता का प्रमाण है। इस परंपरा को यह संगठन आगे भी कायम रखे। उन्होंने कहा कि प्रदेश में उद्योग और व्यापार की उन्नति के लिए राज्य सरकार द्वारा महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार ने छोटे व्यापारियों को हमेशा प्राथमिकता दी है। ई-वे बिल की सीमा 50 हजार से बढ़ाकर 1 लाख रुपये कर दी गई है। हमने पेट्रोल पर वैट 1 रुपये प्रति लीटर कम किया है। व्यापारियों को राहत देते हुए 10 साल पुराने लंबित मामलों में 25 हजार रुपये तक की वैट देनदारी को माफ किया गया है। इसका लाभ प्रदेश के 40 हजार व्यापारियों को मिल रहा है।

नई औद्योगिक नीति- प्रदेश में साढ़े चार लाख करोड़ रुपये के निवेश के प्रस्ताव

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि नई उद्योग नीति से उद्योगों के लिए प्रदेश में सकारात्मक वातावरण बना है। इसके लागू होने के बाद से अब तक प्रदेश में साढ़े चार लाख करोड़ रुपये के निवेश के प्रस्ताव मिले हैं। नवा रायपुर में सेमीकंडक्टर निर्माण के लिए हाल ही में प्लांट का भूमिपूजन हुआ है। हाल ही में हमने दिल्ली, मुंबई और बेंगलुरु में इन्वेस्टर मीट का आयोजन किया। देशभर के कारोबारियों और उद्योगपतियों में इसे लेकर गजब का उत्साह है। वे छत्तीसगढ़ की विकास यात्रा में शामिल होना चाहते हैं।

नई औद्योगिक नीति का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार करने का आग्रह

मुख्यमंत्री ने चैंबर के पदाधिकारियों से राज्य सरकार की नई औद्योगिक नीति का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार करने का आग्रह किया, जिससे प्रदेश में अधिक से अधिक निवेश आकर्षित हो सके। उन्होंने नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को बधाई और शुभकामनाएं भी दीं।

इस अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह ने कहा कि राज्य की अर्थव्यवस्था के लिए बाजार में धन का प्रवाह आवश्यक है। किसान हमारी अर्थव्यवस्था की धुरी हैं। मुख्यमंत्री श्री साय ने किसानों से 3100 रुपये प्रति क्विंटल और प्रति एकड़ 21 क्विंटल के मान से धान की रिकॉर्ड खरीदी की। दो साल का धान बोनस भी दिया गया। प्रदेश का बजट 6000 करोड़ से बढ़कर अब 1 लाख 60 हजार करोड़ रुपये का हो गया है। देश में सर्वाधिक ऑटोमोबाइल विक्रय छत्तीसगढ़ में हो रहा है, जो यह दर्शाता है कि हमारी अर्थव्यवस्था तेजी से आगे बढ़ रही है। वर्ष 2047 तक छत्तीसगढ़ देश के प्रथम तीन विकसित राज्यों में शामिल होगा। प्रदेश के विकास में चैंबर की भी उल्लेखनीय भागीदारी होगी।

पूर्व सांसद और पूर्व राज्यपाल श्री रमेश बैस ने कहा कि छत्तीसगढ़ में राज्य सरकार उद्योग और व्यापार की उन्नति के लिए हरसंभव प्रयास कर रही है। इसी प्रकार उद्योग जगत भी प्रदेश के विकास में अपना योगदान दे रहा है। जब दोनों पहिए साथ-साथ चलते हैं, तो विकास की रफ्तार तेजी से बढ़ती है। रायपुर सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल ने कहा कि सर्वसम्मति से चैंबर के चुनाव होना यह दर्शाता है कि व्यापार जगत तेजी से आगे बढ़ेगा। जो देश व्यापार, व्यवसाय और उद्योग को बढ़ावा देता है, उसकी तरक्की को कोई नहीं रोक सकता। छत्तीसगढ़ में मुख्यमंत्री श्री साय के नेतृत्व में यह कार्य कुशलता से किया जा रहा है। उन्होंने चैंबर के सदस्यों से आग्रह किया कि गर्मियों में लोगों को राहत पहुंचाने के लिए पानी, पना और मठा का वितरण करें।

मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना का शुभारंभ, पहली विशेष ट्रेन से 780 श्रद्धालु तिरुपति, मदुरै, रामेश्वरम रवाना

बुजुर्गों की आंखों में वर्षों से पल रही तीर्थ यात्रा की अभिलाषा हुई पूरी

विधवा और परित्यकता महिलाओं को भी अब मिल सकेगा मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना का लाभ

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने आज रायपुर रेलवे स्टेशन से पहली विशेष तीर्थ यात्रा ट्रेन को तिरुपति, मदुरै और रामेश्वरम के लिए हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस पहली तीर्थ यात्रा ट्रेन में रायपुर और बलौदाबाजार-भाटापारा जिलों के 780 श्रद्धालु बुजुर्ग सम्मिलित हुए, जिनके लिए यह यात्रा केवल धार्मिक अनुभव नहीं, बल्कि सम्मान और स्नेह का प्रतीक बन गई। प्रदेश के बुजुर्गों की वर्षों पुरानी अभिलाषा आज पूरी हो गई जब मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना का विधिवत शुभारंभ किया।

मुख्यमंत्री श्री साय ने तीर्थयात्रा पर जा रहे बुजुर्गों से आत्मीय चर्चा करते हुए कहा कि आप सभी के चेहरे पर जो खुशी है, वही मेरा संतोष है। उन्होंने कहा कि रामेश्वरम में आप लोग पवित्र रामसेतु देख सकेंगे, ज्योतिर्लिंग का दर्शन कर सकेंगे। आप लोग मदुरै तीर्थ का भी दर्शन करेंगे जहां मीनाक्षी मंदिर है। तिरुपति में बालाजी का दर्शन करेंगे। दक्षिण भारत के तीर्थ स्थलों को देखने का यह सुंदर अवसर है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि प्रदेश में मुख्यमंत्री रामलला (अयोध्या दर्शन) योजना अंतर्गत अब तक 22 हजार से अधिक श्रद्धालु अयोध्या में श्री रामलला के दर्शन कर चुके हैं।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि प्रयागराज में 144 वर्षों उपरांत महाकुंभ का आयोजन हुआ। छत्तीसगढ़ के तीर्थयात्रियों ने भी बड़ी संख्या में कुंभ में हिस्सा लिया। छत्तीसगढ़ के तीर्थयात्रियों की सेवा के लिए और उनकी सुविधा का ध्यान रखने के लिए हमने प्रयागराज मेला क्षेत्र में छत्तीसगढ़ पवैलियन तैयार किया था। यहां लगभग साढ़े चार एकड़ में तीर्थयात्रियों के रूकने के इंतजाम थे। यह हमारा सौभाग्य है कि हम गंगा जी में स्नान करने पहुंचे प्रदेश के लाखों श्रद्धालुओं की सेवा कर सके।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि अब श्रद्धालुओं की यात्रा मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना अंतर्गत निरन्तर होती रहेगी। उन्होंने कहा कि इस योजना के लिए हमने 15 करोड़ रुपए का बजट प्रावधान किया है। इस योजना में उज्जैन, पुरी, द्वारिका, वैष्णो देवी, मथुरा, वृंदावन जैसे अनेक तीर्थ स्थलों को जोड़ा गया है, जिनकी निःशुल्क यात्रा कराई जाएगी।

मुख्यमंत्री श्री साय ने इस अवसर पर कहा कि हमारे बुजुर्गों की तीर्थ यात्रा की इच्छा अक्सर आर्थिक कठिनाइयों के चलते अधूरी रह जाती थी। उन्होंने कहा कि हमें संतोष है कि हम उनकी इस इच्छा को साकार कर पा रहे हैं। उन्होंने बताया कि योजना में विधवा और परित्यक्त महिलाओं को भी शामिल किया गया है, जिससे उन्हें भी धार्मिक स्थलों के दर्शन का गौरव प्राप्त हो सकेगा। उन्होंने स्पष्ट किया कि उनकी सरकार युवाओं, किसानों, महिलाओं और आदिवासी समुदाय सहित समाज के प्रत्येक वर्ग के उत्थान के लिए पूरी तरह समर्पित है और इसी दिशा में निरंतर कार्य कर रही है।

यह केवल यात्रा नहीं, संस्कृति और श्रद्धा का संगम है ङ्क मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े

समाज कल्याण मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने कहा कि मुख्यमंत्री

तीर्थ दर्शन योजना केवल तीर्थ यात्रा नहीं, बल्कि हमारी सनातन संस्कृति, परंपराओं और धार्मिक आस्था का जीवंत प्रतीक है। उन्होंने बताया कि इस योजना के तहत उन श्रद्धालुओं को यह अवसर प्राप्त होगा, जो अब तक आर्थिक सीमाओं के कारण तीर्थ यात्रा से वंचित रहे हैं।

सरकार ने श्रद्धालुओं के लिए पूर्ण सुविधायुक्त पैकेज तैयार किया है जिसमें ट्रेन यात्रा, यात्रियों के ठहरने, भोजन, मंदिर दर्शन, सुरक्षा और चिकित्सा जैसी सभी आवश्यक व्यवस्थाएँ शामिल हैं। स्पेशल ट्रेन में टूर एस्कॉर्ट, पुलिस बल और चिकित्सकों की टीम भी उनके साथ यात्रा कर रही है ताकि श्रद्धालुओं को हर क्षण सुरक्षा और सुविधा का अहसास हो। योजना के तहत देशभर के 19 प्रमुख तीर्थ क्षेत्रों को शामिल किया गया है, जिनमें उज्जैन, ओंकारेश्वर, पुरी, हरिद्वार, काशी, शिरडी, वैष्णोदेवी, अमृतसर, द्वारका, बोधगया, कामाख्या मंदिर, सबरीमाला जैसे प्रमुख धार्मिक स्थल सम्मिलित हैं।

समाज कल्याण मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने कहा कि मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना की शुरुआत पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह के कार्यकाल में 4 दिसंबर 2012 को की गई थी। 15 जनवरी 2013 से 10 जून 2019 के मध्य इस योजना के अंतर्गत कुल 272 तीर्थ यात्राओं के माध्यम से 2,46,983 श्रद्धालुओं को लाभान्वित किया गया था। पूर्व सरकार के कार्यकाल के दौरान यह योजना 5 साल तक संचालन में नहीं थी। डॉ. रमन सिंह की सरकार के दौरान संचालित इस योजना को, जिसे उसके बाद आने वाली सरकार ने बंद कर दिया था, अब पुनः प्रारंभ कर वर्तमान सरकार ने छत्तीसगढ़ में बुजुर्गों की श्रद्धा, आस्था और वर्षों से संजोए गए तीर्थ यात्रा के सपने को पूर्ण करने के लिए एक बार फिर पहल की है।

सामान्य गृहिणी से सफल उद्यमी कैसे बनीं रायपुर की कविता...

(राखी श्रीवास्तव)

छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले का रहने वाली एक महिला ने एक बड़ी मिसाल पेश की है. सिलाई मशीन से स्कू गाड़ी का सफर तय किया है. आइए जानते हैं इनकी सफलता का राज क्या है? सिर्फ कुछ साल पहले अपनी कमाई के 13,000 रुपये से सिलाई मशीन खरीदने वाली छत्तीसगढ़ की कविता वर्मा ने आज अपनी मेहनत के दम पर खुद की कार खरीद ली है. कपड़े और जूते के व्यवसाय से कविता सालाना लगभग 8 लाख रुपये तक की आय अर्जित कर रही है. सिलाई मशीन से एसयूवी कार तक के इस सफर में उन्होंने न सिर्फ अपने व्यवसाय को खड़ा किया, बल्कि आर्थिक स्वतंत्रता की मिसाल भी कायम की है.

ऐसी है इनकी कहानी

रायपुर जिले के तिल्दा के किरना गांव की रहने वाली कविता वर्मा का बचपन सिलाई-कढ़ाई और घरेलू कामों में बीता. उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि यही हुनर आगे चलकर उनकी पहचान बनेगा. शादी के बाद जब वह तिल्दा आई, तो उन्हें एक सख्त और पारंपरिक माहौल का सामना करना पड़ा. संयुक्त परिवार की बहू होने के कारण उनसे उम्मीद थी कि वे सिर्फ घरेलू जिम्मेदारियों तक सीमित रहें. घर की महिलाओं का बाहर जाकर काम करना यहां की परंपराओं के खिलाफ माना जाता था.

लेकिन जब आर्थिक तंगी ने घर के हालात मुश्किल बना दिए, तो कविता ने अपने हुनर को अपना हथियार बनाने का फैसला किया. कविता ने वंदना एसएचजी स्व सहायता समूह का हिस्सा बनकर शासकीय योजनाओं और शासन से मिलने वाले ऋणों के बारे में जानकारी इकट्ठा करना शुरू किया.

बिहान में कार्य करते हुए अपने शुरुआती वेतन को बचाकर उन्होंने 13000 की सिलाई मशीन खरीदी थी जो अब भी उनकी बड़ी सी कपड़े की दुकान में संभाल कर रखी हुई है. सिलाई मशीन से कविता ने अपने घर में ही छोटे स्तर पर काम शुरू किया.घर के कामों के साथ दुकान संभालना आसान नहीं था. कई बार पूरे दिन मेहनत के बावजूद सिर्फ 500 रुपये की कमाई होती. लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी 7

बढ़ाने लगीं कारोबार

उनका लक्ष्य सिर्फ काम चलाना नहीं, बल्कि अपने बिज़नेस को बड़ा बनाना था. उन्होंने रणनीति बना-ज्यादा बेचो, चाहे मुनाफा थोड़ा कम हो. पहले वह सिर्फ तिल्दा से सामान लाती थीं, लेकिन धीरे-धीरे रायपुर, सूरत और दिल्ली से भी कपड़े मंगवाने लगीं. त्योहारों और शादी के सीजन में वह खुद खाना-पीना छोड़कर 15-15 घंटे तक काम करतीं, ताकि ज्यादा ऑर्डर पूरे कर सकें।

रायगढ़ मेडिकल कॉलेज बना राज्य का पहला फ्री वाई-फाई सुविधा युक्त शासकीय मेडिकल कॉलेज

ओपीडी पंजीयन क्षेत्र में मरीजों को आभा एप से रजिस्ट्रेशन में मिलेगी बड़ी राहत

मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में नागरिकों की सुविधाओं को डिजिटल और स्मार्ट सेवाओं से जोड़ने की दिशा में निरंतर कार्य किया जा रहा है। इसी क्रम में रायगढ़ स्थित स्व. श्री लखीराम अग्रवाल स्मृति शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय में ओपीडी पंजीयन काउंटर के पब्लिक एरिया (वेटिंग हॉल सहित) को फ्री वाई-फाई ज़ोन में तब्दील किया गया है। यह सुविधा राज्य के किसी भी शासकीय मेडिकल कॉलेज में पहली बार प्रारंभ की गई है। इस अभिनव पहल को स्वास्थ्य मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल एवं वित्त मंत्री श्री ओ. पी. चौधरी के सतत मार्गदर्शन में, अधिष्ठाता डॉ. विनीत जैन एवं अस्पताल अधीक्षक डॉ. एम. के. मिंज के निर्देशन में क्रियान्वित किया गया है।

फ्री वाई-फाई सुविधा का उद्देश्य ओपीडी में आने वाले मरीजों और उनके परिजनों को आभा एप के माध्यम से डिजिटल पंजीयन में आने वाली समस्याओं को दूर करना है। एम.आर.डी. विभाग के अंतर्गत आने वाले इस क्षेत्र में अब मरीज अपने मोबाइल फोन से सीधे आभा एप के माध्यम से पंजीयन टोकन प्राप्त कर सकेंगे, जिससे पर्ची कटवाने की प्रक्रिया अधिक सरल, तेज और पारदर्शी हो गई है। डॉ. एम. के. मिंज ने बताया कि अस्पताल प्रबंधन को यह जानकारी मिली थी कि कई मरीजों को मोबाइल नेटवर्क की समस्या के कारण आभा एप से पंजीयन में कठिनाई हो रही थी। विशेषकर, मेडिकल कॉलेज पहाड़ी क्षेत्र में स्थित होने के कारण यह समस्या लगातार बनी हुई है। इन तकनीकी बाधाओं को ध्यान में रखते हुए यह निर्णय लिया गया कि ओपीडी पंजीयन क्षेत्र में फ्री वाई-फाई सुविधा प्रदान की जाए। इस सुविधा से मरीज और उनके परिजन अब बिना किसी नेटवर्क बाधा के आसानी से आभा एप से पंजीयन कर सकते हैं, जिससे न केवल सुविधा में वृद्धि होगी, बल्कि समय की भी बचत होगी।

उल्लेखनीय है कि नेशनल मेडिकल कमिशन द्वारा 4 जून 2024 को जारी निर्देशानुसार, सभी मेडिकल कॉलेजों को यह सुनिश्चित करना है कि ओपीडी/आईपीडी/आपातकालीन सेवाओं के लिए आने वाले मरीजों का पंजीकरण आभा आईडी के माध्यम से ही किया जाए। इस दिशा-निर्देश के अनुपालन हेतु आयुक्त , चिकित्सा शिक्षा, छत्तीसगढ़ द्वारा भी स्पष्ट निर्देश जारी किए गए हैं कि मेडिकल कॉलेज की मान्यता सुनिश्चित करने के लिए सभी मरीजों का पंजीयन आभा एप के माध्यम से ही किया जाए।

इन्हीं दिशानिर्देशों और मरीजों की सुविधाओं को दृष्टिगत रखते हुए रायगढ़ मेडिकल कॉलेज में फ्री वाई-फाई सुविधा आज से औपचारिक रूप से ओपीडी क्षेत्र में प्रारंभ की गई है। यह पहल रायगढ़ मेडिकल कॉलेज को छत्तीसगढ़ में तकनीकी समावेशन वाले चिकित्सा संस्थानों की अग्रिम पंक्ति में खड़ा करती है और यह निश्चित रूप से डिजिटल हेल्थ मिशन की दिशा में एक सराहनीय और अनुकरणीय कदम है।

संकट- राज्य के बांधों में पिछले वर्ष की तुलना में 14 प्रतिशत कम पानी

गंगरेल से रबी फसल के लिए पानी देने की संभावना बिलकुल कम, मुरुमसिल्ली ,दुधावा और सोंढूर में भी महज 9 टीएमसी पानी

गंगरेल में इस वक्त पिछले साल से कम पानी सिंचाई विभाग के अनुसार गंगरेल बांध में 24 मार्च की स्थिति में क्षमता का 56 फीसदी पानी है। ये हालात अच्छे दिख रहे हैं, पर पिछले साल से तुलना करें, तो काफी कम है। पिछले साल इस बांध में 74 फीसदी पानी था। ये अंतर 18 फीसदी का है। 2023 में भी गंगरेल में इस साल जितना ही पानी था।

पेयजल संकट से सीएम भी चिंतित

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने ग्रीष्मकालीन परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए प्रदेशभर में पेयजल की उपलब्धता को राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता घोषित किया है। ग्रामीणों को पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए आगामी 15 अप्रैल के भीतर निस्तारी तालाबों को सिंचाई नहरों के माध्यम से भरा जाएगा। इसके लिए विभिन्न सिंचाई जलाशयों से नहरों के जरिए पानी छोड़ा जा रहा है। 2 हजार से अधिक निस्तारी तालाबों में पानी भरा जा चुका है।

मुख्यमंत्री के निर्देश के अनुरूप प्रदेशभर में 15 दिवसीय विशेष अभियान चलाकर हैंडपंप व सार्वजनिक नलों की मरम्मत का कार्य किया जाएगा। पेयजल संकट से निपटने के लिए विभाग द्वारा कार्ययोजना बनाई जा रही है।

(कैसर अब्दुलहक, सचिव, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी)

प्रदेश के सिंचाई जलाशयों में वर्तमान में 46 फीसदी जलभराव की स्थिति है। जलाशयों में पेयजल के लिए पर्याप्त मात्रा में जल की उपलब्धता है।

(राजेश सुकुमार टोप्पो, सचिव, जल संसाधन विभाग)

अप्रैल माह शुरू होने से पहले ही गर्मी अपना रौद्र रूप दिखाने लगी है। भू जलस्तर गिरने से नदी और तालाब सूखने लगे हैं। बांधों में भी जलस्तर घटने लगे हैं। राज्य के प्रमुख गंगरेल बांध में महज 15 टीएमसी उपयोगी पानी ही बाकी रह गया है, तो वहीं सहायक बांधों भी मुश्किल से साढ़े 9 टीएमसी उपयोग की पानी ही शेष है। निस्तार के लिये 5 से 6 टीएमसी पानी छोड़े जाने की संभावना है। गंगरेल बांध से इलाके के निस्तारी तालाबों को भरने के लिए पानी छोड़ने का क्रम चालू हो गया है। अप्रैल माह पहले सप्ताह से निस्तार के लिए और ज्यादा पानी छोड़ा जाएगा। राज्य सरकार की चिंता पेयजल संकट वाले संवेदनशील इलाके हैं, जहां भूजल स्तर भी गर्मी में तेजी से गिरता है।

जल संसाधन विभाग के अधिकारियों का कहना है कि प्रदेश के प्रमुख सिंचाई बांधों में वर्तमान में 46 फीसदी जलभराव है, जो पेयजल के लिए पर्याप्त है। हालांकि खुद सरकारी रिकार्ड अलग तस्वीर बता रहा है। सिंचाई विभाग के 24 मार्च के आंकड़ों के हिसाब से राज्य के

46 प्रमुख बांधों में पिछले साल की तुलना में कम पानी है। पिछले साल इस तारीख में बांधों में कुल 60 फीसदी से कुछ ज्यादा पानी था। इससे पहले 2023 में भी बांधों में मार्च के अंतिम हफ्ते तक 63 फीसदी पानी था। इस साल बांधों में 46 फीसदी पानी है, जो पिछले साल से 14 फीसदी कम है। तेज धूप की वजह से बांधों में पानी की वाष्पीकरण दर भी बढ़ने की चिंता सिंचाई विभाग को है। सिंचाई विभाग की योजना राज्य छह हजार तालाबों को बांध के पानी से निस्तार के लिए भरने की योजना है। तालाबों में पानी भरे जाने से आसपास के इलाकों में भूजल स्तर सुधारेगा और हैंडपंप ट्यूबवेल रिचार्ज होंगे।

भिलाई स्टील प्लांट और रायपुर शहर भी गंगरेल के भरोसे

भिलाई स्टील प्लांट के अलावा रायपुर नगर निगम में भी गंगरेल बांध से पानी की आपूर्ति होती है। बताया जा रहा है कि भिलाई और रायपुर नगर निगम के लिए लगभग तीन-तीन टीएमसी पानी देने का अनुबंध हुआ है, लेकिन हर बार अनुबंध के विपरीत 5 से 6 टीएमसी पानी की खपत इन जगहों पर हो जाती है। इस तरह गंगरेल में जितना भी पानी बचा हुआ है वह निस्तार, पेयजल और भिलाई स्टील प्लांट में ही खप जाएगा, ऐसे में किसानों को रबी फसल के लिए पानी देने की संभावना बिल्कुल कम है।

हालांकि सहायक बांधों में 9.50 टीएमसी पानी बाकी है जिसे जरूरत पड़ने पर गंगरेल में शिफ्ट किया जा सकता है, लेकिन सिंचाई के लिए पानी देने की स्थिति में बांध पूरी तरह से खाली हो जाएगा, जिससे काफी संकट का सामना करना पड़ सकता है। विभाग के अधिकारी भी पानी देने दिए जाने की संभावना से इनकार कर रहे हैं, लेकिन अब यह शासन के ऊपर है कि किसानों को पानी देना है कि नहीं। यदि पानी दिया जाता है तो किसके कोटे से पानी की मात्रा कम कियकाका है ये देखना लाजमी होगा।

जलाशयों में आधे से भी कम पानी

जल संसाधन विभाग के मुताबिक प्रदेश के प्रमुख सिंचाई जलाशयों में वर्तमान में 45.69 फीसदी जलभराव है। रविशंकर जलाशय (गंगरेल बांध) में 56, मिनीमाता बांगों में 43, तांदुला में 47, दुधावा में 46, सिकासेर में 41, खारंग में 57, सोंदूर में 56, मुरूमसिल्ली में 25, कोडार में 19, मनियारी में 63, केलो में 41, अरपा भैंसाझार बैराज में 48 प्रतिशत पानी भरा है। वहीं, मध्यम श्रेणी के बांध खरखरा में 40, गोंदली में 53, कोसारटेड़ा में 29, परालकोट में 39, क्षीरपानी में 93, श्याम में 54, मोंगरा बैराज में 26 व मरोदा में 43, सरोदा में 57, घोंघा में 41, मटियामोती में 86, झुमका में 70, गेज टैंक में 63 केलो में 41, अरपा भैंसाझार बैराज में 48 प्रतिशत पानी भरा है। वहीं, मध्यम श्रेणी के बांध खरखरा में 40, गोंदली में 53, कोसारटेड़ा में 29, परालकोट में 39, क्षीरपानी में 93, श्याम में 54, मोंगरा बैराज में 26 व मरोदा में 43, सरोदा में 57, घोंघा में 41, मटियामोती में 86, झुमका में 70, गेज टैंक में 63, केशवा में 22, कर्रानाला बैरॉज में 46 फीसदी जलभराव की स्थिति है। अन्य जलाशयों में भी जरूरत के अनुरूप पानी की उपलब्धता है। कोरबा के हसदेव बांगो बांध में भी पिछले साल से कम पानी है। आज बांध में जलभराव 348 मीटर है, जो पिछले साल 351 मीटर था। सिंचाई विभाग के अनुसार बांध में अभी 4.2.36 फीसदी पानी है। बांध से रबी फसल के लिए 5375 क्यूसेक पानी छोड़ा जा रहा है।

राज्य सरकार ने बनाई विस्तृत कार्ययोजना छत्तीसगढ़ में भीषण गर्मी शुरू होते ही पेयजल संकट गहराने लगा है। कई इलाकों में भूजल स्तर लगातार गिरते जा रहा है। कई हैंडपंप सूख गए हैं या सूखने के कगार पर है। हालांकि गर्मी मौसम में संभावित जलसंकट से निपटने के लिए राज्य सरकार ने कार्ययोजना तैयार कर ली है।

उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा ने नक्सल प्रभावित अति संवेदनशील क्षेत्र रायगुड़ेम में पेड़ के नीचे लगाई चौपाल

छत्तीसगढ़ के इतिहास में पहली बार किसी उपमुख्यमंत्री ने सुकमा जिले के नक्सल प्रभावित अति संवेदनशील क्षेत्र रायगुड़ेम का दौरा किया। उप मुख्यमंत्री एवं गृहमंत्री श्री विजय शर्मा ने गुरुवार को रायगुड़ेम पहुंचकर न केवल सुरक्षा बलों का मनोबल बढ़ाया, बल्कि वहां चौपाल लगाकर ग्रामीणों की समस्याएं भी सुनीं। उपमुख्यमंत्री एवं गृह मंत्री के दौरे से रायगुड़ेम के लोगों में नई उम्मीद जगी है। चौपाल में चर्चा के दौरान ग्रामीण अपने गांव के विकास और जीवन स्तर में बदलाव को लेकर बेहद आशान्वित दिखे।

उप मुख्यमंत्री श्री शर्मा कोंटा विकासखंड स्थित रायगुड़ेम कैंप पहुंचे, जहां उन्होंने सीआरपीएफ जवानों से मुलाकात की। इसके बाद वे बाइक पर सवार होकर दुर्गम इलाकों से गुजरते हुए ग्रामीणों के बीच पहुंचे और खुले मैदान में पेड़ के नीचे जनचौपाल लगाई। चौपाल के दौरान उपमुख्यमंत्री श्री शर्मा ने ग्रामीणों को आश्वस्त किया कि सरकार उनकी हर समस्या का समाधान करने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि 10 अप्रैल से प्रशासनिक शिविर लगाकर सभी ग्रामीणों के आधार कार्ड, राशन कार्ड, वोटर आईडी, आयुष्मान कार्ड, और जन्म प्रमाण पत्र बनाए जाएंगे।

उपमुख्यमंत्री श्री शर्मा ने गांव में बिजली पहुंचाने, सड़क निर्माण कार्य तेज़ी से पूर्ण कराने, सिंचाई के लिए स्टॉपडेम बनाए जाने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि ग्रामीणों को खेती के लिए बीज उपलब्ध कराए जाएंगे। तेंदूपत्ता की खरीदी होगी। शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं बेहतर बनाया जाएगा।

उप मुख्यमंत्री श्री शर्मा ने ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा कि आज तक आपके गांव में स्कूल, आंगनबाड़ी, अस्पताल, बिजली और सड़क नहीं पहुंच सकी थी, क्योंकि नक्सलियों ने विकास कार्यों को रोक रखा था। अब डरने की जरूरत नहीं है। सरकार ने हर जगह आपकी सुरक्षा के लिए कैंप लगाए हैं। उन्होंने कहा कि ग्रामीणों को अब उनके अधिकारों और सुविधाओं से वंचित नहीं रहने दिया जाएगा। अगर किसी भी सरकारी सेवा में समस्या आती है, तो कलेक्टर और मुझे सीधे फोन करें।

गौरतलब है कि रायगुड़ेम लंबे समय से नक्सली गढ़ रहा है और यह नक्सली कमांडर मडवी हिडमा का गृह क्षेत्र भी है। इस इलाके में सरकारी पहुंच बेहद सीमित रही है, जिससे ग्रामीण मूलभूत सुविधाओं से वंचित रहे। श्री शर्मा ने नक्सलियों से मुख्यधारा में लौटने और बिना शर्त शांति वार्ता की अपील की। उन्होंने स्पष्ट किया कि वार्ता तभी संभव होगी जब नक्सली हिंसा का मार्ग छोड़ेंगे। छत्तीसगढ़ सरकार ने देश की सबसे अच्छी नक्सल पुनर्वास नीति लागू की है, जिससे आत्मसमर्पण करने वालों को सम्मान जनक जीवन जीने का अवसर सुलभ हो सके।

कार्यक्रम के अंत में गृहमंत्री श्री विजय शर्मा ने सिविक एक्शन प्रोग्राम के तहत ग्रामीणों को आवश्यक सामग्रियों का वितरण किया। इस दौरान बस्तर कमिश्नर श्री डोमन सिंह, आईजी श्री पी. सुंदराज, एसपी श्री किरण गंगाराम चव्हाण, जिला सीईओ श्रीमती नम्रता जैन, सीईओ नवीन कुमार, 223 बटालियन टू आईसी सुरेश सिंह पायल, डीआईजी सूरज पाल वर्मा, सीईओ 74 बटालियन हिमांशु पांडे सहित अन्य अधिकारी एवं बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित रहे।

विकास की वेदी पर तालाबों की बलि, अब अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे प्राचीन ताल

छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर कभी तालाबों के शहर के नाम से विख्यात थी.लेकिन मौजूदा समय में अब गिनती के तालाब रह गए हैं.विकास के नाम पर तालाबों को पाट दिया गया है.कहीं ऊंची इमारतें बना दी गई हैं.तो कहीं शॉपिंग मॉल बनाकर शहर को विकास का चोला ओढ़ा दिया गया है.शहर में जहां कहीं भी तालाब थे उन इलाकों में कई लोगों ने अतिक्रमण करके मकान और दुकान बना लिया है.ऐसे में कई तालाब अब अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे हैं.

300 तालाब अब रह गए आधे से कम = इतिहासकारों और जानकारों का कहना है कि 15वीं शताब्दी से लेकर 18वीं शताब्दी के मध्य तक रायपुर में लगभग 300 तालाब हुआ करते थे. लेकिन वर्तमान समय में इसकी संख्या लगभग 126 पर सिमट गई है. तालाबों की संख्या कम होने के कारण राजधानी का भूजल स्तर भी गिरता जा रहा है. पुराने समय में लोग इन्हीं तालाबों के पानी से खाना बनाने के साथ ही अपने निस्तारी का काम पूरा किया करते थे.

1402 के शिलालेख में बूढ़ा तालाब का जिक्र

इतिहासकार डॉक्टर रमेंद्रनाथ मिश्र का कहना है कि रायपुर को जब कल्चुरी राजाओं की राजधानी के रूप में विकसित किया गया, उस जमाने में लगभग 300 तालाब हुआ करते थे. 18वीं शताब्दी के मध्य तक तालाबों की संख्या घटकर लगभग 126 हो गई है. बूढ़ा तालाब में 1402 का शिलालेख मिलता है. राजा और शहर के बारे में इस शिलालेख में वर्णन मिलता है. पुराने समय के पांडुलिपि के आधार पर रायपुर को तालाबों का शहर कहा जा सकता है.

तालाबों से घिरा हुआ था शहर

इतिहासकार के मुताबिक बूढ़ा तालाब, महाराज बंद तालाब, मलसाय तालाब, भैया तालाब, खोखो तालाब, बंधवा तालाब, आमा तालाब हांडी तालाब, कंकाली तालाब, राम सागर तालाब, राजा तालाब मोती बाग में बैद्यनाथ तालाब हुआ तो करता था जो आज मोतीबाग के नाम से जाना जाता है. रायपुर शहर चारों तरफ से तालाबों से घिरा हुआ शहर है.

रायपुर में तालाबों पर अतिक्रमण

बूढ़ा तालाब और महामाय मंदिर के बीच था किला

शहर के मध्य में दो महत्वपूर्ण तालाब हैं, जिसमें पहले कंकाली तालाब और दूसरा बुढ़ापारा स्थित बूढ़ा तालाब. कंकाली तालाब को कृपाल गिरी गोस्वामी ने बनवाया था. दूसरा तालाब राम सागर तालाब था, जिसे आज लोग रामसागर पारा के नाम से जानते हैं. रायपुर का खोखो तालाब और रामसागर तालाब महत्वपूर्ण तालाब माने गए हैं. रामसागर तालाब के बारे में कहा जाता है कि देश के पहले लेखक बस्तर भूषण केदारनाथ ठाकुर के द्वारा बनवाया गया था. माता और पिता की मृत्यु कार्तिक पूर्णिमा के दिन हुई थी और उन्हीं की स्मृति में रामसागर तालाब का

निर्माण कराया गया था, लेकिन वह भी आज अपना अस्तित्व खो चुका है- **डॉ रमेंद्रनाथ मिश्र इतिहासकार**

भूजल वैज्ञानिक विपिन दुबे के मुताबिक तालाब रायपुर शहर का हृदय है. तालाब की वजह से बारिश और दूसरे सोर्स का पानी रहता है. जिसकी वजह से लोगों को पानी मिल पाता है. तालाब के माध्यम से ही हजारों लोगों के निस्तार का काम भी होता है. यह स्थिति केवल रायपुर शहर की नहीं है बल्कि पूरे प्रदेश में तालाबों की संख्या पहले की तुलना में काफी घट गई है.

तालाबों की घटती संख्या की वजह से भूजल का स्तर भी घटता जा रहा है. शहर में विकास होने की वजह से तालाबों की संख्या वर्तमान में घटते जा रही है. ऐसे में सरकार को चाहिए कि तालाबों का संरक्षण और संवर्धन करें जिससे भूजल का स्तर बराबर बना रहे

- विपिन दुबे, भूजल वैज्ञानिक

पुरानी बस्ती के स्थानीय निवासी विजय कुमार झा के मुताबिक वो पिछले 64 साल से रायपुर में रह रहे हैं.उनका जन्म भी रायपुर में ही हुआ है. रायपुर में कलचुरी काल के समय लगभग 300 तालाब थे. जो आज आधे से भी कम हो गए हैं. तालाबों की घटती संख्या के बारे में उन्होंने कहा कि इसका मुख्य कारण यह है कि धीरे-धीरे शहर की आबादी बढ़ रही है.शहर में प्लाट कटिंग हो रहे हैं. सौंदर्यीकरण का काम हो रहा है. इन्हीं सब कारणों से तालाबों की संख्या घट गई

अवैध कब्जा भी बड़ा कारण = विजय कुमार झा के मुताबिक तालाबों में अवैध कब्जा कर शॉपिंग मॉल भी बनाए जा रहे हैं. पुराने समय में हैंडपंप और नल नहीं हुआ करते थे उस समय लोग तालाब और कुआं के भरोसे अपना काम चलाया करते थे. पुरानी बस्ती वह एरिया है जिसे लोग तालाब और मंदिर के नाम से जानते हैं.

800 साल पहले शुरु हुआ विकास

आपको बता दें कि ऐतिहासिक और पुरातत्व दृष्टि से रायपुर का इतिहास हजारों साल पुराना है. कलचुरी वंश में जब विभाजन हुआ, तब 14 वीं शताब्दी के अंत में रायपुर की स्थापना हुई. शुरूआत में रायपुर की राजधानी खल्लारी थी.इतिहास के मुताबिक राजा हाजीराज ने दक्षिणी भाग में हाटकेश्वर मंदिर और किला बनाया. खारुन नदी जिसे पहले राठिका नदी के नाम से जाना जाता था.उनके बेटे ने शहर के विकास के लिए बूढ़ातालाब , महामाया मंदिर और महाराज बंध के मध्य किला बनवाया। इसका प्रमाण 1402 के शिलालेख से हुआ है. इसके आधार पर यह कह सकते हैं कि रायपुर का विकास 800 साल पहले शुरू हो गया था.उस समय बस्ती का नाम ब्रह्मपुरी रखा गया.इस दौरान करीब 300 से ज्यादा तालाब इस भाग में थे.

शिक्षा ही है विकास का मूलमंत्र- मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय

मुख्यमंत्री श्री साय छत्तीसगढ़ पाठ्य पुस्तक निगम के नवनियुक्त अध्यक्ष श्री राजा पांडेय के पदभार ग्रहण समारोह में हुए शामिल

शिक्षा ही विकास का मूलमंत्र है। शिक्षा के बिना जीवन अधूरा है। एक पढ़े-लिखे व्यक्ति और अनपढ़ व्यक्ति के जीवन में जमीन आसमान का अंतर होता है। स्कूली बच्चों को पुस्तकें उपलब्ध कराने में पाठ्य पुस्तक निगम की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। यह बातें मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने आज राजधानी रायपुर के शहीद स्मारक भवन में आयोजित छत्तीसगढ़ पाठ्य पुस्तक निगम के नवनियुक्त अध्यक्ष श्री राजा पांडेय के पदभार ग्रहण कार्यक्रम में कहीं।

मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने छत्तीसगढ़ पाठ्य पुस्तक निगम के अध्यक्ष के रूप में पदभार ग्रहण करने पर श्री राजा पांडेय को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। मुख्यमंत्री ने कहा कि पाठ्य पुस्तक निगम का दायित्व है की किताबें समय पर छपें और बच्चों को स्कूल में पुस्तकें समय पर उपलब्ध हों। मुझे पूरी उम्मीद है कि श्री राजा पांडेय पाठ्य पुस्तक निगम के अध्यक्ष के रूप में अपने कर्तव्यों का पूरी ईमानदारी से निर्वहन करेंगे। विकसित छत्तीसगढ़ बनाने में शिक्षा की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका है। इस लिहाज से पाठ्यपुस्तक निगम के पास एक बड़ी जिम्मेदारी है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में नई शिक्षा नीति की शुरुआत की गई है, जिसे हमने छत्तीसगढ़ में लागू किया है। नई शिक्षा नीति में शिक्षा के साथ-साथ रोजगार पर भी फोकस किया गया है। प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर हम बच्चों को 18 स्थानीय बोलियों में किताबें उपलब्ध करा रहे हैं। इससे बच्चे अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त कर पायेंगे। नई शिक्षा नीति का लाभ राज्य के बच्चों को मिल रहा है। छत्तीसगढ़ की 25 वर्ष की यात्रा में शिक्षा के क्षेत्र में देश के शीर्ष संस्थान जैसे आईआईटी, आईआईएम, नेशनल लॉ स्कूल और ट्रिपल आईटी छत्तीसगढ़ में स्थापित हुए हैं। आज चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में छत्तीसगढ़ में 14 मेडिकल कॉलेज हैं। एम्स जैसे राष्ट्रीय चिकित्सा संस्थान का लाभ लोगों को मिल रहा है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि आज छत्तीसगढ़ हर क्षेत्र में तेजी से विकास कर रहा है। आज नवा रायपुर में हमने प्रदेश के पहले सेमीकंडक्टर यूनिट का भूमिपूजन किया है। ये सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में देश का दूसरा यूनिट है। 1143 करोड़ की लागत से इस संयंत्र की स्थापना हुई है। कम्पनी ने 10 हज़ार करोड़ के अतिरिक्त निवेश का प्रस्ताव भी दिया है। इससे सेमीकंडक्टर चिप्स निर्माण में प्रदेश के युवाओं को रोजगार उपलब्ध होगा। इसी तरह नवा रायपुर को आईटी हब बनाने की दिशा में आज स्कवायर बिजनेस सर्विसेज को ऑफिस स्पेस आबंटित किया गया है। बिहान की बहनों को 40 बैटरी चालित ई-रिक्शा भी दिया गया है। साथ ही आज एल्कलाइन वाटर बॉटलिंग प्लांट का भी हमने शुभारंभ किया है। छत्तीसगढ़ की नई औद्योगिक नीति की निवेशकों द्वारा बहुत पसंद किया जा रहा है। एनर्जी और टेक्सटाइल सहित कई क्षेत्रों में राज्य को निवेश प्राप्त हो रहा है। हम सभी को मिलकर छत्तीसगढ़ को आगे बढ़ाना है।

केंद्रीय राज्यमंत्री श्री तोखन साहू ने छत्तीसगढ़ पाठ्य पुस्तक निगम के नवनियुक्त अध्यक्ष श्री राजा पाण्डेय को बधाई एवं शुभकामनाएं दी। उन्होंने शिक्षा के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि शिक्षा समाजिक परिवर्तन की धुरी है। समाजिक परिवर्तन से आर्थिक परिवर्तन संभव है। आर्थिक परिवर्तन से ही सशक्त राष्ट्र की संकल्पनाओं को साकार किया जा सकता है।

उपमुख्यमंत्री श्री अरुण साव ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि हमारी सरकार सुशासन को लेकर कार्य कर रही है। अभी गांवों से लेकर शहरों तक सुशासन तिहार मनाया जा रहा है। सुशासन के उद्देश्यों और आम जनमानस तक शासन की योजनाओं को पहुंचाने में सभी निगम-मंडल का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने इस अवसर पर नवनियुक्त श्री राजा पाण्डेय को बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

संतों का आशीर्वाद, जनसेवा का संकल्प- मुख्यमंत्री साय की विश्व शांति अखंड ब्रह्मयज्ञ में आस्था भरी उपस्थिति

वसुधैव कुटुंबकम् के पथ पर अग्रसर छत्तीसगढ़

भारत की सनातन परंपरा में 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना रची-बसी है। यही वह सोच है जो भारत को विश्व में अद्वितीय बनाती है ङ्क जहाँ विविध आराध्य और परंपराएँ एक ही परिवार की तरह सह-अस्तित्व में रहती हैं। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने राजधानी रायपुर के गॉस मेमोरियल ग्राउंड में आयोजित त्रिदिवसीय 'विश्व शांति अखण्ड ब्रह्म यज्ञ' के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए यह बात कही। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने संतों एवं भक्तों का छत्तीसगढ़ की पावन धरती पर स्वागत किया और प्रदेशवासियों के सुख, समृद्धि व कल्याण की कामना की।

सनातन परंपरा ने सहा हर आघात, फिर भी रही अटूट

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि भारतवर्ष संतों, ऋषियों और तपस्वियों की तपोभूमि रहा है। प्राचीन काल से ही सनातन परंपरा पर समय-समय पर अनेक आघात हुए, लेकिन यह परंपरा कभी नहीं टूटी। सत्य सनातन आलेख महिमा धर्म विकास समिति द्वारा आयोजित यह यज्ञ, उसी परंपरा को और भी सुदृढ़ करने की दिशा में एक प्रेरणादायी पहल है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि आलेख महिमा के संतों से उनका विशेष आत्मीय संबंध रहा है। उनका आशीर्वाद ही है जिसने उन्हें जनसेवा का सौभाग्य दिलाया। उन्होंने बताया कि जशपुर के इला गाँव, रायगढ़ के सरिया, हिमगिर आदि में संतों के आश्रम स्थापित हैं। रायपुर में भी आश्रम के लिए स्थान उपलब्ध कराने का आश्वासन मुख्यमंत्री ने संतों को दिया।

मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना बनी फिर से श्रद्धा की डगर

मुख्यमंत्री श्री साय ने बताया कि राज्य सरकार ने 'मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना' को दोबारा शुरू कर दिया है, जो विगत सरकार के कार्यकाल में पूरी तरह बंद हो चुकी थी। उन्होंने कहा कि कल ही मैंने 780 श्रद्धालुओं को तीर्थयात्रा पर रवाना किया, जो रामेश्वरम, मदुरई और तिरुपति के दर्शन कर रहे हैं। उन्हें विदा करते समय जो आत्मसंतोष मिला, वह अवर्णनीय था। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ माता कौशल्या की भूमि और प्रभु श्रीराम का ननिहाल है। यहाँ के जन-जन में श्रवण कुमार जैसे संस्कार आज भी जीवित हैं। तीर्थ यात्रा करवाना केवल एक योजना नहीं, बल्कि हमारे मूल्यों और परंपराओं का सम्मान है।

श्रीरामलला अयोध्या धाम दर्शन योजना से हजारों श्रद्धालु लाभान्वित

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि 'श्रीरामलला अयोध्या धाम दर्शन योजना' के तहत अब तक 22,000 से अधिक श्रद्धालु भगवान श्रीराम और काशी विश्वनाथ के दर्शन कर चुके हैं। साथ ही उन्होंने राजिम कुंभ के आयोजन की भी चर्चा की, जो प्रदेश की अध्यात्मिक पहचान बन चुका है।

बीजापुर के इस गुफा में चैत्र नवरात्री पर होता है श्रीकृष्ण और राधारानी विवाह, 5 दिन तक चलती है रस्में

छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित बीजापुर जिला से करीब 47 किमी दूर चेरपल्ली के पास सकलनारायण की पहाड़ी है। इस पहाड़ी पर स्थित गुफा में भगवान श्रीकृष्ण की मूर्ति है । हर साल गुड़ी पड़वा यानी हिन्दू नववर्ष के दिन बड़ी तादात में श्रद्धालु दर्शन करने के लिए यहां पहुंचते हैं। सकलनारायण गुफा तक पहुंचने कोई पक्का रास्ता नही हैं । पगडंडियों के रास्ते से होकर भगवान के दर्शन करने भक्त पहुंचते हैं । गुफा के अन्दर घनघोर अंधेरा रहता है । दर्शन करने आए भक्त अपने साथ टार्च या मोबाईल टार्च के सहारे अन्दर प्रवेश करते हैं । सामने के प्रवेश द्वार पर चौखट लगी है ।

हिन्दू नववर्ष पर सकलनारायण गुफा में मेला

सकलनारायण गुफा के अंदर बहुत सारी सुरंगें हैं । इन सुरंगों में भगवान विराजे हुए हैं । पहाड़ी के अन्दर दस मीटर की सुरंग है, जहां गोपिकाओं की मूर्तियां हैं । भक्त यहां भी घुटनों के बल जाकर दर्शन कर लौटते हैं ।

बाहर निकलने का रास्ता काफी छोटा और संकरा है । यहां घुटनों के बल चलकर निकलना होता है । सकलनारायण गुफा का अंतिम द्वार एकदम अनोखा है । गुफा के आसपास सैकड़ों मधुमक्खियों के छत्ते लगे हैं । पहाड़ी के आसपास गांव के पुजारी और ग्रामीण भगवान के दर्शन की पूरी व्यवस्था करते हैं ।

भगवान श्रीकृष्ण और राधा की शादी

हिन्दू नववर्ष के अंतिम और शुरुआत के समय भगवान श्रीकृष्ण और राधा की शादी रचाई जाति है । यह कार्यक्रम पूरे रीति रिवाज से किया जाता है। आसपास के ग्रामीण इस आयोजन में शामिल होते हैं। भगवान की मूर्तियों की शादी रचाई जाति है । यह कार्यक्रम पूरे पांच दिन का होता है ।

शादी समारोह के अंतिम दिन हिन्दू नववर्ष की शुरुवात होती है । दर्शन के लिए आए भक्तों के लिए समिति के तरफ से भोजन का इंतजाम किया जाता है ।

भगवान के दर्शन के लिए दूर दूर से भक्त यहां पहुंचते हैं । पम्भोई परिवार ने बताया कि साल 1900 में गुफा की खोज हुई थी । हर साल यहां चैत्र कृष्ण पक्ष अमावस्या के तीन दिन पहले से मेला लगता है । चैत्र शुक्ल प्रतिपदा यानी नवरात्र शुरू होने वाले दिन इस मेले का समापन होता है ।

इस मेले को हिंदू वर्ष का अंतिम और आगमन मेला कहा जाता है। हर साल यहां हजारों श्रद्धालु पहुंचते हैं और नए साल के आगमन पर भगवान श्री कृष्ण से सुख, शांति, समृद्धि और सौभाग्य की कामना करते हैं।

क्या पुरुषों को सोयाबींस नहीं खाना चाहिए, इससे क्या नुकसान होता है, जान लीजिए सच्चाई

सोयाबींस में पौष्टिक तत्वों का भरमार है. इसे प्रोटीन का खजाना कहा जाता है. प्रोटीन के अलावा भी सोयाबींस में कई तरह के पोषक तत्व होते हैं लेकिन कुछ अध्ययनों में कहा गया है कि सोयाबींस का सेवन पुरुषों को ज्यादा नहीं करना चाहिए. . इसमें पोलिफेनोल नाम का एंटीऑक्सीडेट पाया जाता है जो कैंसर के जोखिम को भी कम कर सकता है. इससे शरीर में ताकत आती है और कई बीमारियों से बचाव होता है. इतने सारे गुण होने के बावजूद कुछ अध्ययनों में कहा गया है कि सोयाबींस का ज्यादा सेवन करने से पुरुषों में स्पर्म काउंट कम हो जाता है और टेस्टोस्टेरोन का लेवल भी कम हो जाता है.

सोयाबींस में प्रोटीन सबसे ज्यादा रहता है. इसलिए इसे प्रोटीन का खजाना माना जाता है. सोयाबींस में मटन जैसा टेस्ट होता है. ऐसे में इसे शाकाहारियों का मटन भी कहा जाता है. हालांकि सोयाबींस में सिर्फ प्रोटीन ही नहीं होता. इसमें कई तरह के अन्य पोषक तत्व भी पाए जाते हैं. इसके अलावा इसमें एंटीऑक्सीडेंट और फाइटो न्यूट्रिएंट्स भी पाए जाते हैं. इसमें पोलिफेनोल नाम का एंटीऑक्सीडेट पाया जाता है जो कैंसर के जोखिम को भी कम कर सकता है. इससे शरीर में ताकत आती है और कई बीमारियों से बचाव होता है. इतने सारे गुण होने के बावजूद कुछ अध्ययनों में कहा गया है कि सोयाबींस का ज्यादा सेवन करने से पुरुषों में स्पर्म काउंट कम हो जाता है और टेस्टोस्टेरोन का लेवल भी कम हो जाता है. ऐसे में पुरुषों का इसका कम सेवन करना चाहिए.

क्या करता है सोयाबींस

हेल्थलाइन की खबर में कहा गया है कि 2001 के अध्ययन में पाया गया था कि सोयाबींस का ज्यादा सेवन करने से पुरुषों में टेस्टोरॉन लेवल में कमी आ जाती है. ऐसा इसलिए होता है क्योंकि इसमें फायटोएस्ट्रोजन होता है जो तेजी से टेस्टोस्टेरॉन लेवल को गिरा देता है. फायटोएस्ट्रोजन महिलाओं में पाया जाता है जो महिला वाले गुणों को बढ़ा देता है और टेस्टोस्टेरॉन हार्मोन को कम कर देता है.यही कारण है कि सोयाबींस पुरुषों को ज्यादा सेवन नहीं करना चाहिए. टेस्टोसटेरोन एक हार्मोन है जो यौन इच्छाओं को बूस्ट करता है और प्रजनन में मदद करता है. टेस्टोस्टेरोन से शरीर में स्टेमिना और ताकत भी आती है. मर्दानगी के गुणों को बढ़ाने में टेस्टोस्टेरॉन की जरूरत होती है. कुछ अध्ययनों में यह भी कहा गया है कि सोयाबींस के ज्यादा सेवन से स्पर्म काउंट में भी कमी आती है.

रेगुलर सेवन से नुकसान

हार्वर्ड यूनिवर्सिटी और अमेरिकन सोसाएटी ऑफ रिप्रोडक्टिव मेडिसीन के अध्ययनों में भी यह देखा गया है कि अत्यधिक सोयाबीन के सेवन से पुरुषों के स्पर्म काउंट में कमी हो सकती है. हालांकि, यह प्रभाव अधिकतर अत्यधिक सेवन पर निर्भर करता है और सामान्य

मात्रा में सेवन से कोई बड़ा नुकसान नहीं होता है. यानी यदि आप सोयाबींस का कभी-कभी सेवन करते हैं तो इससे पुरुषों के स्पर्म पर कोई खास असर नहीं पड़ता है. जो लोग नियमित रूप से सोयाबींस का सेवन करते हैं, उनके साथ यह दिक्कत हो सकती है. हालांकि कुछ अध्ययनों में पुराने अध्ययनों पर सवाल भी उठाया गया है कि और कहा गया है कि इससे पुरुषों के यौन स्वास्थ्य का संबंध नहीं है. यदि है भी तो बहुत मामूली है और इसमें और अध्ययन की जरूरत है.

खाने का बदलता ट्रेंड! मार्केट में आया Sugar Free Jaggery, जानें इसके फायदे

जी वी एस रूक्मणि देवी

Sugar Free Jaggery: फैशन के इस दौर में अब बाजार में एक नया ट्रेंड देखने को मिल रहा है। डाइबिटीज के मरीजों के मीठे की क्रेविंग के लिए बाजार में शुगर फ्री चीजें मौजूद है।

Sugar Free Jaggery: आज के समय में फैशन केवल कपड़ों तक सिमित नहीं है. ये हर चीज में है। यहां तक कि हमारे खाने में भी. फैशन के इस दौर में खाने में भी कई बदलाव हुए हैं। कई लोग अपनी सेहत का खास ख्याल रखते हैं । इसके मुताबिक ही वह अपने खान-पान में बदलाव करते हैं । ऐसे में डाइबिटीज के मरीजों को मीठे से परहेज करना होता है । कई लोग गुड़ को चीनी से बेहतर मानते हैं । तो वहीं कई लोग न गुड़ का इस्तेमाल करते हैं ना ही चीनी का ।

हालांकि, फैशन के इस दौर में अब बाजार में एक नया ट्रेंड देखने को मिल रहा है. डाइबिटीज के मरीजों के मीठे की `विंग के लिए बाजार में शुगर फ्री चीजें मौजूद है. अब इस ट्रेंड में शुगर फ्री गुड़ ने भी एंट्री ले ली है. तो चलिए जानते हैं कि आखिर ये शुगर फ्री गुड़ है क्या? डाइबिटीज के मरीजों के लिए ये कैसे फायदेमंद है?

क्या है शुगर फ्री गुड़?

गुड़ को गन्ने के रस या खजूर से बनाया जाता है जिसमें नेचुरल मिठास रहती है. इसमें ग्लूकोज और फ्रक्टोज होता है. जबकि शुगर फ्री गुड़ को इस तरह से तैयार किया जाता है कि इसमें प्राकृतिक मिठास तो बनी रहती है, लेकिन ग्लाइसेमिक इंडेक्स (GI) कम किया जाता है. जिससे वह ब्लड शुगर के लेवल को बढ़ने नहीं देता है. कई बार इसे आर्टिफिशियल स्वीटनर्स या हर्बल स्वीटनर्स के साथ भी मिलाकर बनाया जाता है।

जानें डाइबिटीज के लिए कितना सही

डायबिटीज के मरीजों को मीठी चीजें खाने की मनाई होती है. शुगर फ्री गुड़ डायबिटीज के लिए एक अच्छा विकल्प हो सकता है, लेकिन इसे अपने खाने में शामिल करने से पहले डॉक्टर या डायटीशियन से सलाह लेना जरूरी है. साथ ही इसका उपयोग कम ही करना चाहिए ।

शुगर फ्री गुड़ के फायदे

शुगर फ्री गुड़ में कैलोरी की मात्रा कम होती है, जिससे यह वजन को नियंत्रित रखता है. यह गुड़ दांतो के लिए भी सुरक्षित रहता है. इसमें चीनी कम होती है, जो दांतों में कैविटी होने से बचाता है. शुगर फ्री गुड़ से स्वास्थ्य लाभ भी हो सकते हैं, जैसे कि पाचन में सुधार, रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि और त्वचा की देखभाल में भी यह फायदेमंद है।

गर्मी में गैस, एसिडिटी और अपच से राहत- पान के पत्ते और अजवाइन से पाएँ चमत्कारी लाभ...

आयुर्वेदाचार्य डॉ. नंद कुमार मंडल,
पूर्णिया जिला औषधालय केंद्र

पूर्णिया के आयुर्वेदाचार्य डॉक्टर नंद कुमार मंडल ने बताया कि पान के पत्ते और अजवाइन का सेवन गैस, एसिडिटी, अपच, सर्दी-खांसी और वजन नियंत्रण में मदद करता है। इसे खाली पेट या खाने के बाद लें। गर्मी का मौसम आते ही शरीर में कई तरह के बदलाव होने लगते हैं। खान-पान में ज़रा सी लापरवाही पेट से जुड़ी समस्याओं जैसे गैस, अपच, एसिडिटी, और पेट फूलने जैसी तकलीफ़ों को जन्म दे सकती है। ऐसे में लोग तुरंत आराम पाने के लिए अंग्रेज़ी दवाओं की ओर भागते हैं, जो लंबे समय में शरीर के लिए नुकसानदायक साबित हो सकती हैं।

लेकिन क्या आप जानते हैं कि आपके घर में ही मौजूद दो साधारण चीज़ें — पान का पत्ता और अजवाइन, इन समस्याओं से छुटकारा दिलाने में रामबाण की तरह काम कर सकती हैं?

पान के पत्ते और अजवाइन से गैस, एसिडिटी और अपच में राहत मिलती है ।

पान और अजवाइन खाने से वजन कंट्रोल और पाचन तंत्र मजबूत होता है।

अजवाइन और पान सर्दी, खांसी और गले की खराश में भी फायदेमंद हैं।

प्राकृतिक गुणों से भरपूर – पान और अजवाइन

आयुर्वेदाचार्य डॉ. नंद कुमार मंडल के अनुसार, पान और अजवाइन दोनों ही पोषक तत्वों से भरपूर हैं। जब इन दोनों का एक साथ सेवन किया जाता है, तो यह शरीर को ना केवल रोगों से बचाता है, बल्कि पाचन तंत्र को मजबूत करके जीवनशैली से जुड़ी कई बीमारियों को जड़ से खत्म करने में सहायक होता है।

मुख्य लाभ

1. पाचन तंत्र को मजबूत बनाता है

अजवाइन में मौजूद थाइमोल तत्व गैस, अपच और एसिडिटी जैसी समस्याओं को दूर करता है।

पान के पत्ते में पाए जाने वाले एंजाइम मेटाबॉलिज्म को तेज करते हैं और भोजन को जल्दी पचाते हैं।

2. सर्दी-खांसी से राहत

अजवाइन बलगम को साफ करता है और गले की खराश को कम करता है।

पान के पत्ते में मौजूद एंटीबैक्टीरियल और एंटीवायरल गुण शरीर को सर्दी, खांसी और संक्रमण से बचाते हैं।

3. मुंह की बदबू और दांतों की सुरक्षा

पान के पत्ते मुंह की दुर्गंध को दूर करते हैं और बैक्टीरिया को खत्म करते हैं।

अजवाइन मसूड़ों की सूजन और दांतों के दर्द में राहत देती है।

4. वजन कम करने में मददगार

अजवाइन मेटाबॉलिज्म को तेज करता है, जिससे फैट जल्दी बर्न होता है।

नियमित सेवन से वजन नियंत्रण में रहता है।

सेवन का तरीका

रोजाना सुबह या रात को एक ताज़ा पान का पत्ता लें, उसमें एक चुटकी अजवाइन डालें और धीरे-धीरे चबाकर खाएं। चाहें तो भोजन के बाद भी सेवन कर सकते हैं। इसे एक प्राकृतिक डाइजेस्टिव के रूप में देखा जा सकता है।

निष्कर्ष

जहां एक ओर अंग्रेज़ी दवाएं तात्कालिक राहत देती हैं, वहीं आयुर्वेदिक और घरेलू उपाय शरीर को भीतर से स्वस्थ बनाते हैं। पान और अजवाइन का यह घरेलू नुस्खा गर्मी में होने वाली आम समस्याओं के लिए बेहद असरदार और पूरी तरह सुरक्षित उपाय है। इस गर्मी, आयुर्वेद को अपनाएँ और सेहतमंद जीवन की ओर कदम बढ़ाएँ।

मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना के तहत विशेष ट्रेन रवाना, वरिष्ठ नागरिक करेंगे ओंकारेश्वर-महाकालेश्वर के दर्शन

(स्वतंत्र छत्तीसगढ़)

मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना के अंतर्गत छत्तीसगढ़ शासन द्वारा आयोजित विशेष तीर्थ दर्शन योजना अंतर्गत आज सूरजपुर रोड रेलवे स्टेशन से उज्जैन, ओंकारेश्वर और महाकालेश्वर के लिए सूरजपुर के 288 तीर्थ यात्रियों को लेकर विशेष ट्रेन रवाना की गई। समाज कल्याण, महिला एवं बाल विकास विभाग की मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने हरी झंडी दिखाकर ट्रेन को रवाना किया। इस अवसर पर उन्होंने तीर्थ दर्शन के लिये रवाना हो रहे श्रध्दालुओं से संवाद भी किया। मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना को लेकर मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने कहा कि मुख्यमंत्री के नेतृत्व में शुरू की गई इस योजना से विशेष रूप से वरिष्ठ नागरिकों को लाभ मिल रहा है, जिन्हें आर्थिक या अन्य कारणों से तीर्थयात्रा का अवसर नहीं मिल पाता था। यह योजना प्रदेशवासियों की आस्था सशक्त होगी। उन्होंने कहा कि सरकार का उद्देश्य केवल तीर्थ स्थलों की यात्रा कराना नहीं, बल्कि नागरिकों को उनकी संस्कृति और परंपराओं से जोड़ना भी है।

इस अवसर पर स्टेशन परिसर में श्रद्धालु यात्रियों के साथ जनप्रतिनिधियों और आम नागरिकों की भी बड़ी संख्या में उपस्थिति रही। मंत्री श्रीमती राजवाड़े ने तीर्थयात्रियों से मुलाकात कर उन्हें शुभकामनाएं दीं और कहा कि यह योजना राज्य सरकार की संवेदनशीलता और वरिष्ठ नागरिकों के प्रति सम्मान को दर्शाती है। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ सरकार बुजुर्गों की आस्था और आध्यात्मिक आकांक्षाओं को साकार करने के लिए कटिबद्ध है।

तीर्थ यात्रियों के दल में शामिल अनेक वरिष्ठ नागरिकों ने इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की सुविधा न केवल आध्यात्मिक लाभ प्रदान करती है, बल्कि वरिष्ठ नागरिकों को मानसिक शांति भी देती है।

गौरतलब है कि मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना के अंतर्गत 60 वर्ष से अधिक उम्र के नागरिकों को देश के प्रमुख तीर्थ स्थलों की यात्रा कराई जा रही है। इस चरण में 10 अप्रैल से 13 अप्रैल तक तीर्थयात्री उज्जैन के प्रसिद्ध महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग, ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग और अन्य प्रमुख धार्मिक स्थलों के दर्शन करेंगे। राज्य शासन द्वारा यात्रा के दौरान भोजन, आवास, स्वास्थ्य सुविधाएं एवं अन्य सभी आवश्यक व्यवस्थाएं निःशुल्क रूप से उपलब्ध कराई जा रही हैं, जिससे वरिष्ठ नागरिकों को किसी प्रकार की असुविधा न हो। इस अवसर पर विधायक प्रेमनगर श्री भुलन सिंह मरावी , नगर पालिका अध्यक्ष , पार्षद-गण, जिला पंचायत सदस्य श्री बाबूलाल सिंह मरापो, श्रीमती कुसुम, सुश्री मोनिका, जनपद पंचायत उपाध्यक्ष, सदस्य, अन्य जनप्रतिनिधि,एस डी एम श्रीमती शिवानी जायसवाल, समाज कल्याण विभाग अधिकारी एवं कर्मचारी व अन्य उपस्थित थे।

अप्रैल से जून माह के बीच किसान कर सकते है ये प्लानिंग...

अप्रैल से जून माह के बीच किसान यदि प्लानिंग कर कृषि कार्य करें तो निश्चित ही आर्थिक रूप से फायदा होगा। कृषि वैज्ञानिकों का यह कहना है कि सही वक्त पर सही कार्य करने से ही फायदा होता है इसलिए जरूरी है कि किसान सलाह के अनुसार कार्य करें। रबी की फसलें जब पक जाएं, तो उन्हें काट लें और दाना निकालकर अच्छे से भंडारण कर लें। महीने के पहले पखवाड़े में ग्रीष्मकालीन मूंग, उड़द, मक्का और चारा फसलों की बुवाई पूरी कर लें। वसंतकालीन मक्का में निराई-गुड़ाई, खरपतवार नियंत्रण और यूरिया की टॉप ड्रेसिंग करें, फिर मिट्टी डालकर सिंचाई करें. खरपतवार, रोग और कीट नियंत्रण के लिए ग्रीष्मकालीन जुताई शुरू करें।

ग्रीष्मकालीन फसलों पर कीट और रोग नियंत्रण के लिए कीटनाशक और कवकनाशकों का छिड़काव करें. नील-हरित शैवाल उगाने के लिए क्यारियां बनाएं और शैवाल खाद डालें। सुनिश्चित करें कि क्यारियों में हमेशा 5-10 सेमी पानी बना रहे। फलों के पेड़ोंके नए बाग लगाने के लिए एक समान दूरी पर गड्ढे खोदें। कटाई के बाद खाली खेत से मिट्टी के नमूने लें और उन्हें मिट्टी परीक्षण के लिए सॉइल लैब में जमा करें।

मई में किए जाने वाले कार्य

- बदलती जलवायु और पानी की कमी को देखते हुए धान की जगह सोयाबीन, मोटे अनाज जैसे बाजरा, ज्वार, चीना, कोदो, कुटकी और कंगनी की खेती पर अपना ध्यान बढ़ा सकते हैं।
- खेत की तैयारी में रोटावेटर का प्रयोग न करें, क्योंकि इसके प्रयोग से खेत में छह इंच की गहराई पर सख्त परत बन जाती है, जो पौधों की जड़ों के विकास में बाधा डालती है और फसल की उत्पादकता पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है।
- खड़ी फसलों (मक्का, चारा, सूरजमुखी, तिल, मूंग आदि) में आवश्यक निराई-गुड़ाई करें और सिंचाई कर नमी बनाए रखें।
- साथ ही यूरिया खाद की आवश्यक टॉप ड्रेसिंग करें. मई के अंत में बसंतकालीन मक्का और सूरजमुखी की कटाई करें. इनके दानों को निकालकर सुखाकर इसका भंडारण करें।
- खरीफ धान के बीजों की व्यवस्था करें और उनकी नर्सरी (बीज क्यारी) तैयार करें।
- अगहन धान की लम्बी अवधि वाली किस्मों की बीज क्यारी में अगहत धान की पौध 20 मई के बाद बोएं।
- बीज बोने से पहले बीज उपचार जरूर करें. मक्का और धान के खेतों में जैविक खाद देकर खेत की अच्छी तैयारी करें।
- धान के खेतों में महीने के शुरू में ही हरी खाद के लिए उड़द की बुआई करें।
- चारे के लिए पिछले महीने बोई गई उड़द की चौगुनी सिंचाई करें।
- गर्मी की सब्जियों की हर हफ्ते सिंचाई करें. जून में बीज बोने के लिए बरसाती प्याज के लिए बीज की क्यारी तैयार करें।
- खाली खेत को मिट्टी पलटने वाले हल से जोतकर खुला छोड़ दें।
- खाद के गड्ढों में नमी के लिए पानी दें और उन्हें मिट्टी से ढक दें।
- पहली बारिश के बाद हल्दी, रतालू और अदरक की बुआई शुरू करें।
- वन नर्सरी में सागौन के बीज बोएं। गम्हार और महुआ के नए उपलब्ध बीजों को आखिरी हफ्ते में बोएं. पहले पखवाड़े में थैलों में शीशम के पौधे उगाएं।
- जानवरों को पक्षियों और कीड़ों से बचाने के लिए उचित व्यवस्था करें।

जून में होने वाले कृषि कार्य

- धान की सीधी बुआई के लिए उपयुक्त किस्म (जल्दी पकने वाले बीज) का चयन कर 15 जून तक सीड ड्रिल मशीन की सहायता से बुआई करें।
- मध्यम अवधि और कम अवधि वाले धान के पौधों को 8 से 22

जून और 23 से 6 जुलाई तक बीज क्यारियों में बो दें।

- आम, लीची आदि फलदार पेड़ों के लिए खोदे गए गड्ढों को पहले सप्ताह में बताई गई मात्रा में खाद, उर्वरक और थाइमेट के साथ मिट्टी से भर दें।
- अगहनी धान के बीज 15 जून तक बो दें। बुवाई के 15 से 20 दिन बाद खेत में पानी की सतह पर 12-15 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से नील हरित शैवाल का छिड़काव करें।
- ग्रीष्मकालीन मक्का की सिंचाई कर कीटों और रोगों से बचाएं। मक्का में भुट्टे निकलने के समय यूरिया का अंतिम छिड़काव करें। अगेती बरसाती मक्का की निराई करें. खरीफ मक्का की बुआई पूरी करें। बुआई से पहले बीज उपचार करें।
- ग्रीष्मकालीन मूंग की फलियों को तोड़कर हरी खाद के लिए मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें। खरीफ दलहनी फसलें जैसे मूंग, उड़द और अरहर बोएं। तिलहनी फसलें और मूंगफली, अरंडी, सोयाबीन और तिल बोएं. बुवाई से पहले बीजों को उपचारित करें और पंक्तियों में बोएं।

- ग्रीष्मकालीन सब्जियों की निराई और फसल सुरक्षा का ध्यान रखें। एंथ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डाकाहा) और एचएस (गलघोंटू) जैसी प्रमुख पशु बीमारियों से बचाने के लिए पशुओं को टीका लगाएं।

छत्तीसगढ़ की बड़ी उपलब्धि- प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में मिला पुरस्कार

छत्तीसगढ़ को राष्ट्रीय स्तर पर एक बार फिर बड़ी सफलता मिली है। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए छत्तीसगढ़ को राष्ट्रीय स्तर पर बड़ी उपलब्धि मिली है। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना की 12वीं राष्ट्रीय समीक्षा बैठक के दौरान छत्तीसगढ़ को देश के बड़े राज्यों की श्रेणी में आज शुक्रवार को सेकंड बेस्ट परफॉर्मिंग स्टेट के पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। राज्य के मोहला - मानपुर-चौकी और सक्ति को भी प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत बेस्ट परफॉर्मिंग जिला चुना गया है।

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से आयोजित यह दो दिवसीय राष्ट्रीय समीक्षा सम्मेलन 18-19 अप्रैल 2025 को तिरुवनंतपुरम (केरल) में आयोजित हो रहा है। भारत सरकार के कैबिनेट सचिव कृषि के करकमलों यह सम्मान आज छत्तीसगढ़ राज्य की ओर से संयुक्त संचालक बीके मिश्रा एवं उपसंचालक उद्यानिकी नीरज शाह ने प्राप्त किया। इसके साथ ही मोहला-मानपुर-चौकी जिले की कलेक्टर तूलिका प्रजापति एवं सक्ति जिले के कलेक्टर टोपनो ने बेस्ट परफॉर्मिंग डिस्ट्रिक्ट का अवार्ड प्राप्त किया।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने इस उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा है कि यह सम्मान राज्य सरकार की किसान हितैषी नीतियों, कृषि मंत्री श्री राम विचार नेताम के मार्गदर्शन और कृषि विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की मेहनत का परिणाम है। यह उपलब्धि छत्तीसगढ़ के किसानों के कल्याण के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाती है। मुख्यमंत्री ने कृषि विभाग की टीम को इस सफलता के लिए बधाई दी और किसानों को समय पर लाभ पहुंचाने हेतु जारी प्रयासों की सराहना की। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि भविष्य में भी छत्तीसगढ़ कृषि के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित करेगा।

बस्तर का धुड़मारास विश्व के सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गांवों में शामिल

प्रकृति की गोद में बसे बस्तर का धुड़मारास गांव का नाम दुनिया के 20 गांवों में शामिल हुआ है

बस्तर जिले के छोटे से गांव धुड़मारास ने देश और दुनिया में अपनी अनोखी पहचान बनाई है। कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान में स्थित धुड़मारास गांव को संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन की तरफ से सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गांव के उन्नयन कार्यक्रम के लिए चयनित किया गया है. संयुक्त राष्ट्र के पर्यटन ग्राम उन्नयन कार्यक्रम के लिए 60 देशों से चयनित 20 गांवों में भारत के छत्तीसगढ़ राज्य के धुड़मारास ने भी अपनी जगह बनाई है।

सीएम विष्णुदेव साय ने जताई खुशीः मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने इस उपलब्धि के लिए पर्यटन विभाग की टीम के साथ ही बस्तर जिला प्रशासन व कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान के अधिकारियों व कर्मचारियों को बधाई दी है. मुख्यमंत्री साय ने कहा कि धुड़मारास की सफलता का मुख्य श्रेय यहां के स्थानीय निवासियों को जाता है, जिन्होंने अपने पारंपरिक ज्ञान और संसाधनों को संरक्षित रखते हुए इसे आकर्षक पर्यटक स्थल में बदल दिया है. धुड़मारास प्राकृतिक सौंदर्य, सांस्कृतिक विविधता और परंपराओं के लिए प्रसिद्ध है. बस्तर के अदभुत आदिवासी जीवनशैली, पारम्परिक व्यंजन, हरियाली और जैव विविधता से समृद्ध यह गांव पर्यटकों के लिए एक आकर्षक ही नहीं बल्कि रोमांचक स्थल है.

सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गांव में बस्तर का धुड़मारास

धुड़मारास गांव दुनियाभर के उन 20 गांवों में से एक है. जिसे सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गांव उन्नयन कार्यक्रम में भाग लेने के लिए चुना गया है. धुड़मारास को इसकी अनूठी सांस्कृतिक विरासत, प्राकृतिक सुंदरता और सतत पर्यटन विकास की क्षमता के कारण चुना गया है. उन्नयन कार्यक्रम में शामिल होने से गांव को उन संसाधनों तक पहुंच प्राप्त होगी जो इसके पर्यटन बुनियादी ढांचे को बढ़ाने, सांस्कृतिक संपत्तियों को बढ़ावा देने और ग्रामवासियों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार में मदद करेंगे।

क्याकिंग और बैम्बू राफ्टिंग की सुविधा

विश्व स्तर पर पर्यटन गांव के रूप में इस गांव की पहचान स्थापित होने का तात्पर्य यह भी है कि लंबे समय के बाद बस्तर में अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों की संख्या में इजाफा हुआ है. बता दें कि धुड़मारास और बस्तर के ही चित्रकोट गांव को इस साल 27 सितंबर को विश्व पर्यटन दिवस के अवसर पर भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय द्वारा सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गांव का पुरस्कार मिला था.

बस्तर में पर्यटक बढ़ने से स्थानीय लोगों को मिला रोजगार- प्रकृति की गोद में बसा धुड़मारास गांव घने जंगलों से घिरा हुआ है. गांव के बीच से बहती कांगेर नदी इसे मनमोहक बना देती है. बस्तर के लोग मेहमाननवाजी के लिए जाने जाते हैं. यही वजह है कि स्थानीय लोग अपने घरों को पर्यटकों के लिए उपलब्ध करवा रहे हैं, ठहरने की सुविधा उपलब्ध करवाने से उन्हें रोजगार मिल रहा है. गांव के युवा पर्यटकों को आसपास के क्षेत्रों की सैर कराते हैं. स्थानीय खानपान के अंतर्गत पर्यटकों को बस्तर के पारम्परिक व्यंजन परोसे जाते हैं. बस्तर के नागलसर और नेतानार में भी स्थानीय युवाओं की ईको पर्यटन विकास समिति की तरफ से गांव में बहने वाली शबरी व कांगेर नदी में क्याकिंग और बैम्बू राफ्टिंग की सुविधा पर्यटकों को मुहैया कराई जा रही है. साथ ही स्थानीय व्यंजन से पर्यटकों को बस्तर के पारम्परिक खान-पान का स्वाद मिल रहा है. जिससे इस समिति को अच्छी आमदनी हो रही है. यह पर्यटन समिति अब अपनी आय से गांव में पर्यटकों के लिए प्रतीक्षालय और शौचालय जैसी बुनियादी सुविधाएं विकसित कर रहे हैं.

कलिंगा विश्वविद्यालय ने सतत विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की मेजबानी की ...

(स्वतंत्र छत्तीसगढ़)

रायपुर कलिंगा विश्वविद्यालय के प्रौद्योगिकी संकाय द्वारा शासकीय इंजीनियरिंग कॉलेज रायपुर, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर, विश्वेश्वरैया ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस गौतम बुद्ध नगर, अल्ट्रा टेक सीमेंट और सेंटर फॉर एनर्जी एंड एनवायरनमेंटल सस्टेनेबिलिटी के सहयोग से 17 और 18 अप्रैल 2025 को 'सतत विकास के लिए उभरती प्रौद्योगिकी' विषय पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। सतत विकास के लिए उभरती प्रौद्योगिकियां पर आयोजित सम्मेलन ने पेशेवरों, शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं, नीति निर्माताओं और उद्योग विशेषज्ञों को सतत विकास पर उभरती प्रौद्योगिकियों की नवीनतम प्रगति, अनुप्रयोगों और संभावित प्रभावों पर चर्चा करने, साझा करने और अन्वेषण करने के लिए एक व्यापक मंच प्रदान किया।

कार्यक्रम का उद्घाटन पारंपरिक दीप प्रज्ज्वलन समारोह के साथ हुआ, जो ज्ञान और आत्मज्ञान का प्रतीक है। प्रतिष्ठित वक्ताओं ने सतत विकास के दृष्टिकोण पर अंतर्दृष्टि साझा की, जिसका उद्देश्य भविष्य की पीढ़ियों की अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा करना और एक ऐसा समाज बनाना है जहां रहने की स्थिति और संसाधन उनकी उपयुक्तता को कम किए बिना मानवीय आवश्यकताओं को पूरा करें। इस प्रकार दो दिनों तक विचारोत्तेजक चर्चाओं का मंच तैयार हुआ।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विश्वेश्वरैया ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस के सलाहकार डॉ. एस.पी. पांडे थे। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. शरद चंद्र श्रीवास्तव, प्रोफेसर और डीन, स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर और डॉ. बृजेश पटेल, रिसर्च प्रोफेसर, नेशनल ताइवान यूनिवर्सिटी थे। उद्घाटन सत्र के दौरान कलिंगा विश्वविद्यालय के गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

डॉ. शरद श्रीवास्तव ने उद्योग 5.0 पर अपने विचार साझा किए, जिसे मानव-तकनीक साझेदारी के रूप में भी जाना जाता है, जो मानव रचनात्मकता, नवाचार और समस्या-समाधान कौशल के महत्व पर जोर देता है, साथ ही आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), रोबोटिक्स और इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी) जैसी उन्नत तकनीकों के उपयोग पर भी जोर देता है।

कार्यक्रम में अतिथि के रूप में शासकीय इंजीनियरिंग कॉलेज रायपुर के मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग के प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष डॉ. अजय त्रिपाठी उपस्थित थे, जिन्होंने मैकेनिकल इंजीनियरिंग में सौर पैनलों और ऊर्जा, उत्पादन और ताप प्रबंधन के उपयोग पर प्रकाश डाला।

डॉ. बृजेश ने ताइवान में नई तकनीकों का उपयोग करके बड़े पैमाने पर किए जा रहे सामाजिक कार्यों और प्रशासनिक कार्यों पर प्रकाश डाला। भारतीय मानक ब्यूरो के निदेशक सुमन कुमार गुप्ता ने तकनीकी

क्षेत्रों में उपयोग किए जाने वाले मानकों के बारे में बताया और यह भी बताया कि किस प्रकार तकनीक किसी विशेष सामग्री की विश्वसनीयता बढ़ाने में मदद करती है। डॉ. बोगीरेड्डी चंद्रा, सहायक प्रोफेसर, एएलटी विश्वविद्यालय, अल्माटी, कजाकिस्तान ने कजाकिस्तान में लॉजिस्टिक्स और परिवहन के क्षेत्र में तेजी से विकसित हो रहे नवाचारों के बारे में उदाहरण के साथ समझाया।

सम्मेलन में 550 से अधिक शिक्षाविदों ने भाग लिया तथा कुल 305 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। सम्मेलन में कुल 07 तकनीकी सत्र आयोजित किए गए। प्रस्तुत शोध पत्रों के विषय थे – सतत कृषि और खाद्य सुरक्षा के लिए नवीन प्रौद्योगिकियां, वैश्विक स्वास्थ्य उन्नति के लिए सतत नवाचार, जल प्रबंधन और स्वच्छता के लिए उन्नत समाधान, सतत भविष्य के लिए परिवर्तनकारी ऊर्जा प्रौद्योगिकियां, लचीले और सतत विकास के लिए तकनीकी नवाचार, सतत विकास के लिए प्रौद्योगिकी-संचालित शासन और न्याय तथा सतत शिक्षा के लिए नवीन शैक्षिक प्रौद्योगिकियां। तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ. एमजेडआर खान, डॉ. उदय राज, डॉ. सूरज मुक्ति एवं डॉ. एसपी शुक्ला ने की।

संयोजक डॉ. वी.सी. झा ङ्क प्रभारी डीन- प्रौद्योगिकी संकाय, डॉ. मनोज कुमार निगम-विभागाध्यक्ष, मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग और डॉ. स्वप्निल जैन-सहायक प्रोफेसर, मैकेनिकल इंजीनियरिंग ने कहा कि अकादमिक सम्मेलन का एक उद्देश्य शोध पत्रों को संकलित करके एक पुस्तक प्रकाशित करना है ताकि पाठकों को विषय के बारे में जागरूक किया जा सके। 25 प्रोफेसरों और 30 छात्रों के गतिशील

सहयोग ने सम्मेलन के निर्बाध क्रियान्वयन को सुनिश्चित किया।

अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में नया रायपुर विकास प्राधिकरण, भारतीय मानक ब्यूरो रायपुर, गुड होप ब्लड सेंटर रायपुर, अवनी पब्लिकेशन, केआईपीएम टेक्निकल कैम्पस गोरखपुर, मेरी लाडो रायपुर, सीआईटी साइंस कॉलेज अभनपुर, कल्पवृक्ष इंप्रेशन प्राइवेट लिमिटेड, कैरियर तोशिबा रायपुर, प्रेम आर्ट गैलरी मोवा, रॉयल इलेक्ट्रिकल एंड सोलर एनर्जी सॉल्यूशन्स एंड सर्विसेज रायपुर, मेडिंग्लिश लर्न, एमएस कंस्ट्रक्शन रायपुर, भिलाई कैन डू पर्वत फाउंडेशन, बालाजी विद्या मंदिर रायपुर, बिल्डक्राफ्ट इंजीनियरिंग एंड आर्किटेक्ट रायपुर, दुर्गा अर्थ मूवर्स भाटापारा, चंद्रा ट्रांसपोर्ट जांजगीर चांपा, हरि टूर एंड ट्रेवल्स और मौर्य भारत गैस मोवा के प्रतिनिधियों ने अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के आयोजन में भागीदार के रूप में भाग लिया।

निवेश के मामले में देश के टॉप-10 राज्यों में शामिल हुआ छत्तीसगढ़

वित्तीय वर्ष 2025 में देशभर में जो नए निवेश हुए हैं, उनमें छत्तीसगढ़ ने भी अपनी खास जगह बनाई है, ताजा आंकड़ों के अनुसार, छत्तीसगढ़ में 218 नई परियोजनाएं शुरू हुई हैं, जिनमें कुल 1,63,748.95 करोड़ रुपये का निवेश आया है. यह देश के कुल निवेश का 3.71 प्रतिशत हिस्सा है, जो एक बड़ी उपलब्धि मानी जा रही है. इस सफलता के पीछे छत्तीसगढ़ सरकार की नई औद्योगिक नीति का बड़ा योगदान है. छत्तीसगढ़ अब कारोबार का नया हब बन रहा है. पिछले एक साल में किए गए 300 से ज्यादा सुधारों ने इसे छोटे व्यापारियों से लेकर बड़े उद्योगपतियों तक के लिए आसान, पारदर्शी और फायदेमंद बना दिया है. अब कागजी झंझट कम हैं, काम ज्यादा तेज होता है और हर प्रक्रिया ज्यादा पारदर्शी बन गई है.

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने पिछले वर्ष ही नवंबर में राज्य की नई औद्योगिक विकास नीति 2024-30 का शुभारंभ किया था. इस नीति को रोजगारपरक और विजन-2047 के अनुरूप विकसित भारत के निर्माण में सहायक बनाने का लक्ष्य रखा गया. मुख्यमंत्री साय ने इस नीति को रोजगारपरक बताते हुए कहा था कि यदि कोई उद्योग 1,000 से अधिक युवाओं को रोजगार देता है तो उसे विशेष प्रोत्साहन दिया जाएगा. राज्य के युवाओं को रोजगार मूलक प्रशिक्षण के लिए प्रति व्यक्ति 15,000 रुपये प्रति माह का अनुदान देने का प्रावधान भी इस नीति में किया गया.

भीषण गर्मी में भी छत पर लगी टंकी का पानी गर्म नहीं होगा, अपनाएं यह तरीका, रिजल्ट कर देगा हैरान

सूरज की तपिश दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है. कई जगहों पर तो अप्रैल महीने में ही पारा 40 डिग्री को पार कर गया है। मौसम विज्ञानिकों के अनुमान के मुताबिक अप्रैल के आखिर और मई की शुरुआत में गर्मी और बढ़ने के संकेत मिल रहे हैं.वहीं, जून में क्या होगा इसका अंदाजा लगाना मुश्किल है. बता दें, गर्मी बढ़ने के साथ ही तरह-तरह की परेशानियां भी बढ़ने लगती हैं. गर्मियों में छत पर रखी पानी की टंकी का पानी गर्म हो जाना एक आम समस्या है. सूरज की तपिश के कारण टंकी का पानी इतना गर्म हो जाता है कि उसका इस्तेमाल करना नामुमकिन हो जाता है। गर्मियों में टंकी के पानी से घर के काम करने के साथ-साथ नहाना भी परेशानी भरा होता है. ऐसे में क्या आपको भी हर साल इस परेशानी से जूझना पड़ता है और इससे निजात पाने का उपाय तलाश रहे हैं तो ये खबर आपके लिए है...

अगर आप इस बात को लेकर परेशान हैं कि गर्मी के मौसम में टैंक के पानी को ठंडा कैसे रखें? तो परेशान होने की कोई जरूरत नहीं है. आज हम आपके लिए टैंक के पानी को ठंडा रखने के कुछ टिप्स लेकर आए हैं। अगर आप इन टिप्स को फॉलो करेंगे तो टैंक का पानी जरूर ठंडा रहेगा7

पानी की टंकी को रिफ्लेक्टिव रंग से पेंट करें

अधिकांश लोगों के घरों में काले रंग की पानी की टंकी लगी होती है. यह पानी की टंकी अन्य मौसमों में कोई समस्या पैदा नहीं करती। लेकिन, जब गर्मियां आती हैं तो काले पानी के टैंकों का पानी जल्दी गर्म हो जाता है। इसका मुख्य कारण यह है कि काला रंग गर्मी को तेजी से अवशोषित करता है। इसलिए, विशेषज्ञों का कहना है कि गर्मियों में ब्लैक वाटर टैंक का पानी जल्दी गर्म हो जाता है। इसलिए आपको काले रंग का टैंक को डायरेक्ट सनलाइट के संपर्क से बचाना चाहिए. यदि आपका टैंक काला है, तो उसे रिफ्लेक्टिव रंग से पेंट कर दें. पानी की टंकी को सफेद रंग से रंगना वैज्ञानिक रूप से भी सिद्ध है7 सफेद रंग एक रिफ्लेटिव रंग है, जो हिट को वापस रिफ्लेक्ट करता है7 आप पानी की टंकी को अंदर और बाहर दोनों तरफ से पेंट कर सकते हैं। अंदर की ओर पेंट करने से टैंक में बैक्टीरिया की वृद्धि रुक जाती है7 इसके लिए आपको 100 प्रतिशत शुद्ध ऐक्रेलिक पेंट का उपयोग करना पड़ेगा।

टैंक को एल्युमिनियम फॉयल से ढकें- गर्मियों में टैंक के पानी को ठंडा रखने के लिए एल्युमिनियम फॉयल एक अच्छा विकल्प है. चूंकि एल्युमिनियम फॉयल गर्मी को परावर्तित करता है, इसलिए टैंक पर कम धूप पड़ती है. इससे पानी अधिक गर्म नहीं होता है. आप पानी की टंकी पर इंसुलेशन कवर भी लगा सकते हैं. इससे गर्मियों में टैंक का पानी ठंडा रहता है और सर्दियों में पानी को गर्म रखने में काफी मदद मिलती है. इसका एक फायदा यह है कि इससे टैंक लंबे समय तक चल सकता है.

पाइप के चारों ओर कवर लगाएं- पानी सिर्फ पानी की टंकी से ही नहीं बल्कि पाइप से भी गर्म होने की संभावना अधिक होती है. ऐसी गर्मियों में पाइप को बचाने के लिए उन्हें ढकना सबसे अच्छा होता है. बाजार में कई तरह के कवर उपलब्ध हैं. पानी को ठंडा रखने के लिए इस कवर को पाइप के चारों ओर लपेटा जा सकता है.

टैंक को छाया में रखें- गर्मियों में पानी की टंकी लगातार धूप के संपर्क में रहती है. ऐसे में अगर आप टैंक के ऊपर छाया बना दें तो टैंक में पानी गर्म नहीं होगा। नतीजतन पानी का तापमान सामान्य बना रहेगा।

पतली थैली से ढकें- खासकर गर्मियों में सीधे धूप के संपर्क में आने से टैंक में पानी गर्म हो जाता है। इससे बचने के लिए टैंक को पतली थैली से ढक दें। फिर उसे तिरपाल से ढक दें। ऐसा करके आप कुछ हद तक पानी में धूप पहुंचने से रोक सकते हैं। नतीजतन, विशेषज्ञों का कहना है कि टैंक में पानी को कुछ हद तक ठंडा रखा जा सकता है।

इस रिपोर्ट में आपको दी गई सभी स्वास्थ्य संबंधी जानकारी और सलाह केवल आपकी सामान्य जानकारी के लिए है. हम यह जानकारी वैज्ञानिक अनुसंधान, अध्ययन, चिकित्सा और स्वास्थ्य पेशेवर सलाह के आधार पर प्रदान करते हैं. आपको इसके बारे में विस्तार से जानना चाहिए और इस विधि या प्रक्रिया को अपनाने से पहले अपने निजी चिकित्सक से परामर्श करना चाहिए.

सरहुल पर्व- छत्तीसगढ़ में मनाया जाने वाला एक पर्व , जाने क्या है इसका महत्व ...

सरहुल मध्य-पूर्व भारत के आदिवासी समुदायों का एक प्रमुख पर्व है, जो झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, छत्तीसगढ़ और मध्य भारत के आदिवासी क्षेत्रों में मनाया जाता है। इस पर्व को मुख्य रूप से मुण्डा, भूमिज, हो, संथाल और उराँव आदिवासियों द्वारा मनाया जाता है, और यह उनके महत्वपूर्ण उत्सवों में से एक है। यह उत्सव चैत्र महीने के तीसरे दिन, चैत्र शुक्ल तृतीया को मनाया जाता है। यह नए साल की शुरुआत की निशानी है। हालांकि इस त्योहार की कोई निश्चित तारीख नहीं होती क्योंकि विभिन्न गांवों में इसे विभिन्न दिनों पर मनाया जाता है। इस वार्षिक उत्सव को बसंत ऋतु के दौरान मनाया जाता है और इसमें पेड़ों और प्रकृति के अन्य तत्वों की पूजा शामिल होती है। इस समय, साल के पेड़ों में फूल आने लगते हैं। झारखण्ड में, इससे एकराजकीय अवकाश घोषित किया गया है।

सरहुल का शाब्दिक अर्थ है साल वृक्ष की पूजा, सरहुल त्योहार धरती माता को समर्पित है - इस त्योहार के दौरान प्रकृति की पूजा की जाती है। सरहुल कई दिनों तक मनाया जाता है, जिसमें मुख्य पारंपरिक नृत्य सरहुल नृत्य किया जाता है।

आदिवासी मुख्य रूप से प्रकृति पूजक हैं। वे धरती, आकाश, सूर्य, चंद्र, पेड़ पौधे, नदियों की पूजा करते हैं। चैत्र वैशाख के महीने में प्रकृति पूरी तरह से नए रूप में होती है। पेड़ों से पुराने पत्ते गिर जाते हैं और उनमें नए पत्ते आते हैं। इसी दौरान आदिवासी सरहुल पर्व उत्साह के साथ मनाते हैं। यह त्योहार उनके लिए नए साल की शुरुआत का प्रतीक भी है।

आदिवासियों का मानना है कि वे इस त्योहार को मनाए जाने के बाद ही नई फसल का उपयोग मुख्य रूप से धान, पेड़ों के पत्ते, फूलों और फलों का उपयोग कर सकते हैं। भूमिज इस पर्व को हादी बोंगा के नाम से और संथाल इसे बाहा बोंगा के नाम से मनाते हैं। इसे बा: परब और खाद्दी परब के नाम से भी जाना जाता है।

त्योहार के दौरान साल के फूलों, फलों और महुआ के फलों को जायराथान या सरनास्थल पर लाए जाते हैं, जहां पाहान या लाया (पुजारी) और देउरी (सहायक पुजारी) जनजातियों के सभी देवताओं की पूजा करता है। जायराथान पवित्र सरना वृक्ष का एक समूह है जहां आदिवासियों को विभिन्न अवसरों में पूजा होती है। यह ग्राम देवता, जंगल, पहाड़ तथा प्रकृति की पूजा है जिसे जनजातियों का संरक्षक माना जाता है। नए फूल तब दिखाई देते हैं जब लोग गाते और नृत्य करते हैं। देवताओं की साल और महुआ फलों और फूलों के साथ पूजा की जाती है। आदिवासी भाषाओं में साल (सखुआ) वृक्ष को %सारजोम% कहा जाता है।

देवताओं की पूजा करने के बाद, गांव के पुजारी (लाया या पाहान) एक मुर्गी के सिर पर कुछ चावल अनाज डालता है स्थानीय लोगों का मानना है कि यदि मृगी भूमि पर गिरने के बाद चावल के अनाज खाते हैं, तो लोगों के लिए समृद्धि की भविष्यवाणी की जाती है, लेकिन अगर मुर्गी नहीं खाती, तो आपदा समुदाय की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इसके अलावा, आने वाले मौसम में पानी में टहनियाँ की एक जोड़ी देखते हुए वर्षा की भविष्यवाणी की जाती है। ये उम्र पुरानी परंपराएं हैं, जो पीढ़ियों से अनमोल समय से नीचे आ रही हैं।

सभी झारखंड में जनजाति इस उत्सव को महान उत्साह और आनन्द के साथ मनाते हैं। जनजातीय पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को रंगीन और जातीय परिधानों में तैयार करना और पारंपरिक नृत्य करना। वे स्थानीय रूप में चावल से बनाये गये %हांडिया% पीते हैं। आदिवासी पीसे हुए चावल और पानी का मिश्रण अपने चेहरे पर और सिर पर साल फुल (सारजोम बाहा) लगाते हैं, और फिर जायराथान के आखड़ा में नृत्य करते हैं।

हालांकि एक आदिवासी त्योहार होने के बावजूद, सरहुल भारतीय समाज के किसी विशेष भाग के लिए प्रतिबंधित नहीं है। अन्य विश्वास और समुदाय जैसे हिंदू, मुस्लिम, ईसाई लोग नृत्य करने वाले भीड़ को बधाई देने में भाग लेते हैं। सरहुल सामूहिक उत्सव का एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करता है, जहां हर कोई प्रतिभागी है। आदिवासी मुंडा, भूमिज, कोल, हो और संथाल लोग इस त्योहार को हर्ष और उल्लास के साथ मनाते हैं।

केसरी चैप्टर 2 बॉक्स ऑफिस कलेक्शन डे 4.30 करोड़ का आंकड़ा पार...

अक्षय कुमार, आर. माधवन कोर्ट रूम ड्रामा फिल्म केसरी चैप्टर 2: द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ जलियांवाला बाग ने रिलीज से पहले काफी चर्चा बटोरी। हालांकि ओपनिंग डे पर फिल्म की धीमी शुरुआत रही। लेकिन वीकेंड पर फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर अच्छी खासी कमाई की। लेकिन क्या फर्स्ट मंडे टेस्ट में केसरी चैप्टर 2 की कमाई में पहली गिरावट देखने को मिलेगी या फिर परिस्थिति स्थिर रहेगी ? आइए पहले सोमवार को केसरी चैप्टर 2 के बॉक्स ऑफिस कलेक्शन पर एक नजर डालते हैं...

हिस्टोरिकल कोर्टरूम ड्रामा केसरी चैप्टर 2

द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ जलियांवाला बाग में, अक्षय कुमार ने एडवोकेट शंकरन नायर का किरदार निभा रहे हैं। उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ कानूनी लड़ाई लड़ी थी और 1919 में जलियांवाला बाग में मासूमों के हत्या को लेकर कोर्ट में चुनौती दी थी। वहीं, आर. माधवन एडवोकेट नेविल मैकिंकले की भूमिका निभा रहे हैं। जबकि, अनन्या पांडे दिलरीत गिल की भूमिका में हैं। यह अक्षय का आर. माधवन और अनन्या पांडे दोनों के साथ पहला कोलैबोरेशन है।

अक्षय कुमार, आर. माधवन और अनन्या पांडे की केसरी चैप्टर 2 ने पहले दिन भारतीय बॉक्स ऑफिस पर धीमी शुरुआत की। इसने ओपनिंग डे पर।.84 करोड़ रुपये के साथ बॉक्स ऑफिस पर अपना खाता खोला। हालांकि, सकारात्मक समीक्षा और अच्छी वर्ड ऑफ माउथ ने फिल्म को बॉक्स ऑफिस पर अच्छी बढ़त दिखाने में मदद की, जिससे रिलीज के दूसरे और तीसरे दिन फिल्म ने डबल डिजिट में कमाई की।

मेकर्स के मुताबिक, केसरी चैप्टर 2 ने शनिवार और रविवार को क्रमश: 10.08 करोड़ रुपये और 11.70 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया, जिससे तीन दिनों में केसरी 2 की कुल कमाई 29.50 करोड़ रुपये हो गई. खैर, वीकेंड कलेक्शन अच्छा रहा. हालांकि, निश्चित रूप से फिल्म से और अधिक की उम्मीद थी।

केसरी चैप्टर 2 बॉक्स ऑफिस कलेक्शन डे 4

सबकी निगाहें वीकडेज पर टिकी हैं। केसरी चैप्टर 2 को अपने चौथे दिन यानी सोमवार को बॉक्स ऑफिस पर अच्छी कमाई करनी होगी। आमतौर पर, फिल्में अपने पहले सोमवार को 50त्न की गिरावट दिखाती हैं, इसलिए अगर %केसरी 2% रिलीज के चौथे दिन बॉक्स ऑफिस पर 5 से 6 करोड़ रुपये के आसपास कलेक्शन करती है, तो

यह एक अच्छा आंकड़ा होगा। हालांकि मौजूदा ट्रेंड को देखते हुए ऐसा लग रहा है कि फिल्म अपने चौथे दिन लगभग 4-5 करोड़ रुपये का कलेक्शन करेगी, जो एक बार फिर औसत आंकड़ा होगा। अगर शाम और रात के शो में उछाल आता है, तो फिल्म 5-6 करोड़ रुपये के आसपास कलेक्शन कर सकती है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, केसरी चैप्टर 2 80-100 करोड़ रुपये के बजट पर बनी है, इसलिए निश्चित रूप से, फिल्म को सप्ताह के दिनों में बॉक्स ऑफिस पर अच्छी कमाई करनी होगी और दूसरे सप्ताह में भी अच्छा प्रदर्शन करना होगा। इस सप्ताह इमरान हाशमी की ग्राउंड जीरो के अलावा कोई बड़ी रिलीज नहीं है, जिसने रिलीज से पहले बहुत अच्छी चर्चा नहीं की है, इसलिए अक्षय कुमार की कोर्टरूम ड्रामा को इसका फायदा मिल सकता है।

Save Tree
Save Life

छत्तीसगढ़ संवाद आर.ओ.-13227/83

तेंदूपत्ता संग्राहकों का जीवन खुशहाल

- पहली बार ₹5,500 प्रति मानक बोरा की दर से संग्राहकों को पारिश्रमिक
- 12 लाख 50 हजार तेंदूपत्ता संग्राहकों का संवर रहा जीवन

सुशासन से समृद्धि की ओर

Visit us : ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO DPRChhattisgarh DPRChhattisgarh www.dprcg.gov.in